Hindi translation of novel Second Chance

डॉ. संदीप जाटवा

सेकंड चांस

अगर जीवन में आपको दूसरा मौका मिलता हैं
तो आप क्या बदलेंगे. . .

A FOOD FOR THE SOUL
ALL THE RAGE

"LIFE CHANGING "
HARP FARMER

"EMOTIONAL"
SARATHBABU.IN

"A POWERFUL MESSAGE"
MYHAPPYCHANCE.COM

"A PERFECT READ"
HALO OF BOOKS

L I T C H E E

सेकंड चांस

अगर आपको जीवन में दूसरा मौक़ा मिलता है तो आप क्या बदलेंगे...

Published by

Litchee Publications

pvt ltd

63, Ravi Shankar Shukla Nagar, Dewas (MP) 455001 www.**litchee**publications.com

Cover designed by Litchee Publications creative team

Copyright © 2016 by Dr. Sandeep Jatwa

All rights reserved.

Hindi translation of

Second Chance by Dr. Sandeep Jatwa

Edited by **Nishant Singh Dasondhi**

No part of this book may be used or reproduced, in any manner whatsoever without the written permission from the Publisher except in the case of quotations embodied in critical articles or reviews.

Rs. 255/-

समर्पण

जिन्हें दूसरा मौक़ा मिला और जिनकी ज़िंदगी बदल गई।
और
मेरे माता-पिता श्री रमेश चन्द्र जाटवा और श्रीमति विमला जाटवा को।

1. एक रहस्यमयी फ़ोन कॉल

यह कैसे हो सकता है? वही बेढंगा सपना महीने में बाहरवी बार? काले रंग की कैडिलैक चलाते हुए शेखर कपूर ने सोचा जिसके माथे पर विचारों की शिकन थी। कैडिलैक सड़क की सतह पर तैर रही थी। जैसे ही शेखर कपूर, ऐरोवॉक शू कंपनी के चेयरमैन, ने एक्सीलरेटर पर अपना पैर दबाया उसकी कार ने टोयोटा को पीछे छोड़ दिया और उसने स्पीडोमीटर पर नज़र डाली--104 किलोमीटर प्रति घंटा।

कार की आधी खुली खिड़की से हलकी हवा आकर शेखर के चेहरे को चूम रही थी।

रेड़ियो पर एक महिला ने कहा, 'रूपये में डॉलर के मुकाबले सत्ताईस पैसे की गिरावट आई है और यह ग्रीष्म की सबसे बड़ी गिरावट हैं।'

हवा का एक झोंका जैसे ही अधखुली खिड़की से टकराया, शेखर ने अपने चारों तरफ़ देखा, क्योंकि उसे कुछ महसूस हुआ--अचानक माहौल में बदलाव। उसने कार परफ्यूम के अलावा भी कोई गंध सूँघी। कार के अंदर अचानक ही एक अलग माहौल था लेकिन वह नहीं जानता था क्या बदल चुका था। उसे लगा जैसे कुछ बुरा होने वाला है। उसने आँखों पर ज़ोर डालकर दूर आसमान में देखा, एक छोटी आकृति आकाश में उभर रही थी लेकिन उसकी नज़रें धुँधली थी जैसे कार की विंडशील्ड के पहले डैशबोर्ड पर कुछ तैर रहा हो। शेखर ने धुँधलेपन को अपने बाएँ हाथ से स्पर्श करने की कोशिश की लेकिन उसने केवल हवा को छुआ।

'ब्राज़िल की फ़ुटबॉल टीम ने अर्जेंटीना को हराया और यह केवल...'

मुझे चश्मे की ज़रूरत है। यह क्या है?

उसने एक बार और आसमान की तरफ़ देखा लेकिन फिर उसे नज़रअंदाज़ करते हुए समाचार पर अपना ध्यान लगाया आख़िरकार यह फ़ुटबॉल के बारे में था।

'अगला मैच सोमवार को इटली और फ्रांस के बीच है और ये देखना दिलचस्प...'

जैसे ही शेखर ने रेडियो की आवाज़ बढ़ाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया वही बुरा सपना उसकी आँखों के सामने छा गया। उस सपने को अपने दिमाग़ से निकालने की निर्बल कोशिश में उसने अपनी तर्जनी उँगली से स्टीयरिंग व्हील पर तबला बजाया।

उसके सीने में ज़ोरदार कंपन हुआ जिसने उसका ध्यान खींच लिया। ये कंपन अचानक और इतनी जल्दी से बढ़े कि शेखर लगभग सहम गया और उसने तुरंत अपने कोट की जेब से कँपकँपाता ब्लैकबेरी निकाल लिया।

उसने जो देखा उससे उसके चेहरे पर चिंता की लकीरें गहरी हो गईं। फ़ोन की काली स्क्रीन पर दो हरे शब्द चमक रहे थे--*प्रथम चेतावनी।* उसके मन में विचार उठा कि आख़िर स्क्रीन पर कोई नंबर और कॉल को अस्वीकार करने का कोई विकल्प क्यों नहीं था। उसने अपने आसपास देखा, सड़क पर बहुत से वाहन तेज़ रफ़्तार से दौड़ रहे थे। उसने एक बार फिर विंडशील्ड के सामने तैरते धुँधलेपन के पार आकाश में देखा। वह छोटी आकृति अब तक सफ़ेद बादलों से बने उल्टे भँवर का रूप ले चुकी थी जो धीरे धीरे घूम रहा था। शेखर परेशान लग रहा था। फ़ोन के कंपन बढ़ते जा रहे थे। *क्या यह फटने वाला है?* शेखर ने सोचा। वह नहीं जानता था उसे क्या करना चाहिए। उसने जहाँ भी मोबाईल स्क्रीन को छूने की कोशिश की शब्द प्रथम चेतावनी ने स्थान बदल लिया व उसके स्थान पर एक *उत्तर* शब्द उभर आया। उसे कॉल अस्वीकार करने का कोई विकल्प नहीं दिख रहा था। उसने फ़ोन को बंद करने की भी कोशिश की लेकिन बंद करने का स्विच कार्य नहीं कर रहा था। बेमन से उसने *उत्तर* शब्द पर अपना अँगूठा छुआ और जैसे ही उसके अँगूठे ने स्क्रीन को स्पर्श किया धीरे धीरे घूमते सफ़ेद बादल काले पड़ गए और तेज़ी से घूमने लगे और पूरे आकाश पर काले बादल छा गए।

उसने थूक गटका और अपने चारों तरफ़ देखा और ये देखकर उसकी आँखें दहशत से फैल गईं कि सड़क पर और कोई वाहन नहीं था।

जब उसने फ़ोन अपने बाएँ कान पर रखा, उसके हाथ काँप रहे थे।

"हैलो," शेखर हकलाया।

"शेखर कपूर," एक मोटी संवेदनाशून्य आवाज ने कहा।

जैसे ही शेखर ने वह आवाज़ सुनी उसे यकीन हो गया कि जिस अप्रिय भावना का उसे एहसास हो रहा है उसका कारण यह आवाज़ ही है। डैशबोर्ड के ऊपर हवा में उसने किसी अदृश्य चीज़ की उपस्थिति महसूस की, और जैसे कोई उसे चीरने वाला है इस भय के साथ उसने उस अदृश्य चीज़ को छूने की कोशिश की परंतु अब भी वहाँ पर कुछ नहीं था।

“कार चलाते समय सावधान रहे, यह खतरनाक है और यह अपने आप को बदलने का एक संकेत है,” आवाज़ ने चेतावनी दी।

“कौन बोल रहा है?” शेखर ने चिंतित स्वर में पूछा।

“तुम्हारा सवाल गलत है,” आवाज़ ने कहा। शेखर को ऐसा लगा जैसे आवाज़ फ़ोन से नहीं आ रही थी बल्कि कोई उसके सामने महज़ दो फ़ुट दूर बैठकर उससे बात कर रहा था।

शेखर ने थूक गटका, “तुम कहाँ से बोल रहे हो?”

“अब यह सही सवाल है,” आवाज़ हँसी, “न्याय की नगरी से।”

“सॉरी,” शेखर को लगा जैसे उसने कुछ गलत सुना। “न्याय की नगरी?”

“हाँ, तुमने सही सुना है,” आवाज़ मुस्कुराई।

“कहाँ है ये न्याय की नगरी?” शेखर चिढ़ के मारे लगभग चिल्लाया। “और ये क्या बकवास है? तुम मुझसे क्या चाहते हो? और तुम्हें मेरा नंबर कहाँ से मिला? अगर तुम्हें लगता है कि तुम मुझे डरा कर मुझसे पैसे ऐंठ सकते हो तो तुम गलत हो।” बोलते ही शेखर को डर सा लगा। उसे ऐसा नही कहना चाहिए था। उसके मन मे विचार आया।

आवाज हँसी। “सभी सवाल बेमतलब है। तुमने जो गलत किया है उसे बदल डालो। और रही पैसे की बात तो मुझे बताओ *तुम्हारे हिसाब से तुमने अपने सपने में जो फ़र्श देखा है उसकी क़ीमत क्या होगी?”*

हैरानी से शेखर का मुँह खुला रह गया, *आखिर वह आवाज़ उसके सपने के बारे में कैसे जानती थी?* उसने पूरी दुनिया में अपने सपने के बारे में किसी को नहीं बताया था। उसने बोलने के लिए अपना मुँह खोला लेकिन वह आवाज़ जा चुकी थी। वह फ़ोन को घूरता रहा बिना यह जाने कि वह क्या करें, क्या सोचें और किस पर विश्वास करें। कोई भी किसी के सपने के बारे में नहीं जान सकता तो वह कैसे...? भयभीत, शेखर ने फ़ोन को पास की सीट पर फेंक दिया।

उसने चारों तरफ़ अपनी गर्दन घुमाई और उसने जो देखा उसके होश उड़ गए। हाईवे पर बहुत सी गाड़ियाँ दौड़ रही थी जहाँ कुछ ही देर पहले एक भी वाहन नहीं था। *सारी गाड़ियाँ कहाँ गायब हो गई थी?* शेखर ने ख़ुद से पूछा और ऊपर की तरफ़ देखा जहाँ बादलों का भँवर घूम रहा था। उसे ये देखकर हैरानी हुई, आसमान में घूम रहे काले बादल अब सफ़ेद हो चुके थे और उन्होंने घूमना बंद कर दिया था और सामान्य रूप से व्यवस्थित हो गए थे।

शेखर पूरी तरह से उलझन में था। *यह क्या था? उसने क्या देखा?* कहीं उसकी आँखें उसे किसी तरह से धोखा तो नहीं दे रही थी? क्या यह किसी प्रकार का छल था? या यह भी उसी तरह का कोई सपना था जिसने आज सुबह उसे नींद से जगा दिया था। उसके चेहरे पर उलझन भरे भाव अब गहरा चुके थे। क्या इसका कोई संबंध उस सपने से था? या...

क्या मैं पागल हो रहा हूँ?

शेखर ने अपने आप को विचारों के जाल मे फँसता हुआ पाया और वह जितना उससे निकलने की कोशिश कर रहा था उतना ही फँसता जा रहा था। *एक फ़ोन कॉल बिना किसी नंबर के, मौसम में अचानक बदलाव, वह आदमी शेखर के सपने के बारे में जानता था,* यह सभी सवाल उसे परेशान कर रहे थे और उसके पास एक भी जवाब नहीं था। एक चीज़ जो शेखर अच्छे से जानता था वह यह थी कि उसने यह आवाज़ पहली बार सुनी थी।

पंद्रह मिनट बाद, शेखर अब भी अपनी तेज़ रफ़्तार कार में विचारमग्न था। *वह कौन था? जो भी उसने कहा था क्या उसका कोई मतलब था?* शेखर ने सोचा। वह ऐरोवॉक शू कंपनी से केवल दो किलोमीटर दूर था और उसने फिर से एक जाना पहचाना अनिष्टसूचक भाव महसूस किया। उसने अपने आसपास देखा, सबकुछ सामान्य नज़र आ रहा था। कार चलाते वक़्त उसके मन में सपने, फ़ोन कॉल और मौसम में बदलाव के विचार थे। उसे लगा जैसे कुछ बहुत भयानक होने वाला है हालाँकि वह नहीं जानता था क्या। ओह नहीं... शायद वह जानता था वह भयानक चीज़ क्या थी। वह चीज़ उसकी हथैली के नीचे थी-- स्टीयरिंग व्हील! शेखर ने उसे घुमाने की कोशिश की, लेकिन यह बिलकुल नही घुम रहा था। उसने और अधिक ताक़त लगाई लेकिन यह पूरी तरह से जाम हो गया था, जैसे इसे सौ वर्षों तक बिना छुए छोड़ दिया गया हो।

कैडिलैक का स्टीयरिंग व्हील जाम नहीं हो सकता, शेखर ने सोचा।

कार चलाते समय सावधान रहे, यह खतरनाक है और यह अपने आप को बदलने का एक संकेत है।

शेखर की आँखें दहशत के मारे फटी रह गई थी और उसके हाथों ने स्टीयरिंग व्हील को कसकर थाम लिया था। *यह कैसे हो सकता है?* शेखर ने सोचा। उसकी तेज़ रफ़्तार कार कुछ बाईं ओर घुस रही थी। वह जानता था अगर उसे दुर्घटना से बचना है तो उसे स्टीयरिंग व्हील घुमाना होगा।

वह चेतावनी सच नहीं हो सकती, शेखर ने सोचा।

वह अपनी मौत की परछाई को देख सकता था जो उसका इंतज़ार कर रही थी और वह ख़ुद उसकी ओर तेज़ गति से बढ़ रहा था। शेखर की एड्रिनल ग्रंथि ने सिकुड़कर हार्मोन रक्त में स्त्रावित कर दिया। वह अपनी मांसपेशियों में रक्त का प्रवाह महसूस कर रहा था। उसका दिल फड़फड़ा रहा था, उसकी पुतलियाँ फैल गई थी, उसकी आँखें और अधिक उभरी हुई लग रही थी और उसके माथे पर पसीने की बूँदें चमकने लगी थी। उसने ज़ोर से साँस अंदर खींची।

कैडिलैक बंदुक की गोली की रफ़्तार से *होंडा* को लगभग रगड़ते हुए निकली। शेखर ने अपनी पूरी ताकत से ब्रेक पर पैर दबाया, कार के टायर चीख़ें और अनियंत्रित होकर घसीट गए। कैडिलैक के बाईं तरफ़ के टायर हवा में ऊपर उठ गए। भय के बादलों ने शेखर का दम घोंट दिया। उसने सोचा, यह पलटने वाली है। *मैं मरने वाला हूँ।* कार हाइवे के बीचोबीच रूक गई और उसके बाईं ओर के पहिए ज़मीन पर धम्म से गिर गए। उसने भगवान का शुक्रिया अदा किया कि कार पलटी नहीं।

उसकी उभरी हुई आँखों ने तुरंत चारों तरफ़ का जायज़ा किया और यह सुनिश्चित किया कि वह सुरक्षित है। उसने गहरी साँस ली और अपने हाथ के पिछले हिस्से से माथे का पसीना पोंछा। अपने शरीर के सभी हिस्सों को जाँचने के बाद उसने आह भरी, *मैं ज़िंदा हूँ।* उसने अपनी आँखें बंद की, उसे सुरक्षित रखने के लिए अपनी माँ का शुक्रिया अदा किया और कार से बाहर आ गया।

अन्य वाहनों को दुर्घटना से बचने के लिए गाड़ियाँ मोड़ना पड़ी।

“क्या तुम सो रहे हो, बेवकूफ़... ” शेखर ने सुना जब एक फोर्ड उसके पास से निकली लेकिन उसने नज़रअंदाज कर दिया क्योंकि उसने अभी अभी मौत के न्योते को नकार दिया था।

अब कई गाड़ियाँ कैडिलैक के पास से गुज़रते समय धीमी हो रही थी। हर गुज़रते पल के साथ शेखर के चेहरे पर डर की लकीरें कमजोर पड़ रही थी।

एक मारूति उसके पास आकर रूकी और सफ़ेद कुर्ता पहने अधेड़ उम्र के ड्राइवर ने पूछा “क्या हुआ? क्या मैं आपकी कुछ मदद कर सकता हूँ?”

शेखर ने उसे घूरा और वह उसे तब तक घूरता रहा जब तक कि मारूति ड्राइवर को असहज न लगने लगा, फिर बिना कुछ कहे मारूति ड्राइवर वहाँ से चला गया।

शेखर ने अपनी पसंदीदा कार पर खरोंच ख़ोजी और उम्मीद करता रहा था कि उसे वे न मिले। उसने कैडिलैक को हर तरफ़ से देखा और जब उसे कोई खरोंच दिखाई नहीं दी उसने चैन की साँस ली लेकिन जैसे ही उसने कार का दरवाज़ा खोला संतुष्टि, डर में तब्दील हो गई। शेखर ने अपने आप को कार में बैठने के लिए मनाया और जब वह कार में बैठ रहा था तभी एक एस.यु.वी. उसके पास आकर रूकी और पीछे की सीट पर बैठी महिला ने पूछा, “क्या सब ठीक है?”

शेखर ने कोई जवाब नहीं दिया जैसे उसने कुछ सुना ही नहीं, वह अपनी कार में बैठा, इंजन चालू किया और कार धीरे धीरे आगे बढ़ने लगी। अपने बेतरतीब ख़्यालों में भी वह जानता था उसे कार धीरे व सावधानीपूर्वक चलानी होगी।

सपना, अनिष्टसूचक भावना, थरथराता फ़ोन, रहस्यमयी फ़ोन कॉल, चेतावनी, घूमते बादल और स्टीयरिंग व्हील, यह सब एक ही दिन में? यह क्या हो रहा है? शेखर हैरान था, वह ना तो कुछ सोच पा रहा था और ना ही सोचना बंद कर पा रहा था। *कार चलाते समय सावधान रहें, यह खतरनाक है,* उसके दिमाग़ में एक आवाज़ गूँजी जिसने उसके पूरे शरीर को मौत के ख़ौफ़ से भर दिया, वही ख़ौफ़ जिसने कुछ समय पहले उसका हलक सूखा दिया था।

शेखर का दिमाग़ चकरा रहा था; उसमें सिर्फ़ उलझे हुए सवाल फुदक रहे थे। वह उलझन व ख़ौफ़ के गर्त में धंसता जा रहा था और किसी चीज ने उसे चौंका दिया। यह फिर से स्टीयरिंग व्हील ही था। उसने स्टीयरिंग व्हील को थोड़ा सा घुमाया और उसे हैरत हुई कि स्टीयरिंग व्हील बहुत आसानी से घूम रहा था जैसे उसमें कभी कोई ख़राबी थी ही नहीं।

अब स्टीयरिंग व्हील के सुचारू रूप से काम करने बावजूद वह कैडिलैक को बहुत धीमे चला रहा था जैसे यह कोई अविदित आदेश हो। कार ऐरोवॉक शू कंपनी की तरफ़ बहुत धीरे धीरे रेंग रही थी, और शेखर की नज़रें सड़क पर गड़ी थी लेकिन उसका दिमाग़ भटक रहा था। उसके चेहरे पर ख़ौफ़ और हैरानी थी।

शेखर दाईं तरफ़ मुड़ा, अपनी कंपनी के गेट से परिसर में दाख़िल हुआ, और कैडिलैक को लाईम-स्टोन फ़र्श पर बीचोबीच पार्क करके उसने चाबी हमेशा की तरह कार में ही छोड़ दी। कार से उतरते हुए उसने अपने फ़ोन पर नज़र डाली, एक बेचैनी के साथ उसे उठाया और अपने कोट के जेब में डाल लिया।

मुझे सामान्य दिखना चाहिए, उसने सोचा। और उसके लिए इसका मतलब था-- *अभिमानी।*

◆ ◆ ◆

लगभग पूरी काँच की बनी एक विशाल व शानदार इमारत के प्रवेश द्वार के ऊपर धातु का एक बड़ा सा शब्द था--ऐरोवॉक। हाल ही हुई घटना को अनदेखा करते हुए, शेखर विशाल इमारत के प्रवेश द्वार की तरफ़ बढ़ा; उसकी चाल अकड़ से भरी व रौबदार थी। वह जैसे ही काँच के विशाल द्वार तक पहुँचा, नीली यूनिफार्म पहने एक दुबले-पतले और युवा सुरक्षा गार्ड ने शेखर के लिए अदब से द्वार खोला और उसका अभिवादन किया, "गुड मॉर्निंग, सर।"

शेखर ने अंदर आकर उसे घूरा। युवा गार्ड भयभीत लग रहा था।

"तुम्हारी टोपी तिरछी क्यों है?" शेखर ने रौबदार लहज़े में पूछा।

गार्ड हकलाया लेकिन उसके गले से कोई आवाज़ नहीं निकली। उसने तुरंत टोपी सीधी की।

"अब भी तिरछी है।"

“माफ़ कीजिए, सर,” गार्ड हकलाया।

“इसे ठीक कर लें या अपने लिए नई नौकरी ढूँढ लें।”

“माफ़ कीजिए, सर। यह फिर से नहीं होगा,” गार्ड ने कहा।

“होना भी नहीं चाहिए,” शेखर लिफ़्ट की तरफ़ चल दिया।

गार्ड के लिए कुछ भी नया नहीं था, वही रोज सबसे पहले कंपनी में शेखर से मिलता था, शेखर को रोज उसकी यूनिफार्म में कुछ गलती नज़र आती थी और उसकी पसंदीदा थी गार्ड की टोपी। गार्ड को रोज इसके लिए डाँट पड़ती थी। उसने अपनी टोपी को सीधा रखने के लिए कई तरीके अपनाएँ थे। उसकी टोपी पर कई सारे छोटे छोटे निशान थे जो उसने टोपी को हर ओर से नापकर बनाए थे ताकि वह अपनी टोपी को सीधा रख सके लेकिन उसके मालिक को उसकी टोपी हमेशा तिरछी ही लगती थी। उसने नाक की नोक से सिर के बाल की ओर माथे पर एक अदृश्य सीधी लकीर खींची और टोपी के निशान को उस लकीर की सीध में लाकर पहन लिया।

शेखर कपूर लिफ़्ट की तरफ़ तेज़ क़दमों से बढ़ रहा था, उसकी चाल अभिमान से सराबोर थी। उसने उन सभी को अनदेखा किया जिन्होंने उसका अभिवादन किया और वह लिफ़्ट में घुस गया। उसने एक नवयुवक को लिफ़्ट की तरफ़ आते हुए देखा लेकिन उसने बटन दबाकर लिफ़्ट का द्वार बंद कर दिया।

शेखर अपने शानदार केबिन में दाख़िल हुआ; यह एक आयताकार कमरा था जिसमें कई चित्र, मॉर्डन आर्ट व एंटीक फूलदान थे। टेबल पर अपना बैग रखकर वह कमरे के कोने में गया जहाँ एक खूबसूरत महिला की तस्वीर पर पुष्पहार चढ़ा था। उसने महिला की आँखों में झाँका। महिला की सुंदर मुस्कान उसके चेहरे पर मुस्कान नहीं ला सकी। उसने गले में गाँठ महसूस की और उसकी आँखें नम हो गई। वह सुंदर महिला उसकी माँ थी जिनकी चौबीस साल पहले एक कार दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी लेकिन शेखर की आत्मा पर यह घाव अब भी उतना ही ताज़ा था। इतने सालों बाद, आज भी जब वह अपनी माँ की आँखों में देखता था तो उसकी आँखें गिली हो जाती थी। वह वापस जाकर अपनी कुर्सी में धँस गया। चिंताकुल, उसने घंटी बजाई। सफ़ेद यूनिफार्म पहने एक चपरासी द्वार पर आया।

“एक कप कॉफी,” शेखर ने चपरासी को आदेश दिया, “और मिस्टर क्षीरसागर को भेजना।”

चपरासी वापस चला गया।

शेखर को उसके ऑफ़िस की पेंटीग, चित्र या फूलदान या और कुछ भी पसंद नहीं था, उसे केवल उसकी कुर्सी पसंद थी जिस पर वह बैठा था। उसने अपनी टेबल पर रखे काले

पत्थर के छोटे से जूते की प्रति पर नज़र डाली जो उसके पिता की निशानी थी। वे इसे अपनी टेबल पर रखा करते थे जब वे एरोवॉक के चेयरमैन थे। वे इसे पसंद करते थे और शेखर ने पिछले दस वर्षों में इसका स्थान भी नहीं बदला था। लेकिन जब भी वह इसे देखता था उसके सीने में एक टीस सी उठती थी। ध्यानमग्न, उसकी नज़र पत्थर के जूते पर थी और अचानक बादलों के भँवर, कँपकँपाता फ़ोन व अनियंत्रित कैडिलैक की तस्वीर उसकी आँखों के सामने तैरने लगी। उसने कुर्सी पर अपनी स्थिति बदली और इन छवियों को अपने दिमाग से निकाल दिया।

शेखर खड़ा होकर अपने ऑफ़िस की काँच की दीवार की ओर चल दिया। उसने ऑफ़िस के सामने के बगीचें में खेल रहे बच्चों और उनके आनंदित चेहरों को देखा। बच्चों की माताएँ आपस में बात कर रही थी और बीच बीच में अपने बच्चों की पहरेदारी भी कर रही थी। शेखर ने काँच में अपना प्रतिबिम्ब देखा और एक मोटी शक्ल और फ्रेंच कट दाढ़ी वाले आदमी ने उसे वापस घूरा जिसकी उम्र पैंतीस से चालीस के बीच थी। उसने फिर से उन ख़ुशहाल बच्चों को देखा। वह भी कभी बच्चा था, वह भी कभी ख़ुश था लेकिन अब जीवन उसे एक बोझ सा लगने लगा था।

एक आदमी दरवाज़े पर आया।

"सर, क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?"

शेखर ने पलटकर उसे देखा। "मनीष, अंदर आओ," उसने कहा और वह आकर अपनी कुर्सी पर बैठ गया।

"सर, आज आप अलग दिख रहे है," लंबे व दुबले-पतले मनीष क्षीरसागर ने कहा जिसके बिना-कारण-मुस्कुराते-चेहरे की वजह से वह चापलूस लग रहा था। "आप हैंडसम लग रहे हैं।"

शेखर ने हाथ हिलाकर उसकी बात को ख़ारिज किया और उसे बैठने का इशारा किया। मनीष उसके सामने कुर्सी पर बैठ गया; उसकी पीठ थोड़ी झुकी हुई थी।

"सर, एक नई मुलाज़िम है, मिस हृषिता..."

"मुझे लोन के बारे में बताओ," शेखर ने कहा। "क्या तुमने बैंक मैनेजर से बात की।"

"जी हाँ, सर..." मनीष झिझका, "मैंने बैंक मैनेजर से बात की।" मनीष अपने शर्ट की जेब में कुछ खोजने लगा जैसे उसने जेब में कोई फ़ाइल रखी थी।

चपरासी कॉफी का कप लेकर ऑफ़िस में दाख़िल हुआ और उसने भाप छोड़ता कॉफी का कप टेबल पर रख दिया।

"मिस्टर कैलाश चंद्र को भेजो।" मनीष ने चपरासी से कहा और चपरासी हामी भरकर वहा से चला गया।

शेखर ने मनीष को घूरा और कहा "कैलाश क्यों? तुम जानते हो मुझे वह पसंद नहीं।"

"मैं जानता हूँ, सर," मनीष ने कहा। "सर, हम उसे बेमतलब ही तनख़्वाह देते हैं मुझे लगा हमें अपने पैसों को उपयोगी बनाना चाहिए।"

शेखर ने सहमति में सिर हिलाया। *मुझे नहीं पता डैड ने कैलाश को जनरल मैनेजर क्यों चुना था। वह बिलकुल बेकार है और डैड एक बेवकूफ़ जिन्होंने उसे चुना।* शेखर ने सोचा।

"नई फ़ैक्टरी के बारे में बताओ," शेखर ने कहा। "क्या निर्माण अच्छा चल रहा हैं।"

"सर सबसे पहले तो मैं आपके चुनाव की तारीफ़ करना चाहूँगा--बैंगलोर! यह हमारे बिज़नेस के लिए बहुत अच्छा चुनाव हैं। निर्माण बहुत अच्छा चल रहा है लेकिन सर जल्द ही हमें कच्चे माल के लिए पैसे ट्रान्सफर करना होंगे।"

"हमें निर्माण के लिए लोन चाहिए," शेखर ने कहा, "और वो भी जल्दी।"

"जी सर," एक पल रूक कर मनीष ने कहा, "सर, क्या मैं आपसे एक सवाल पूछ सकता हूँ?"

शेखर ने हामी में सिर हिलाया।

"सर, जब आप उससे इतनी नफ़रत करते हैं तो उसे निकालकर बाहर क्यों नहीं कर देते?"

काश मैं ऐसा कर पाता, शेखर ने सोचा। "मैं ऐसा नहीं कर सकता," उसने कहा।

"ऐसा क्यों, सर?"

क्योंकि वह मेरे डैड का पसंदीदा था, शेखर ने सोचा लेकिन उसने कुछ नहीं कहा।

शेखर रोमांचित था क्योंकि उसने कड़ी मेहनत की थी और अब वह अपना बिज़नेस फैला रहा था। उसने बैंगलोर में एक ज़मीन का टुकड़ा खरीदा था और उस पर निर्माण भी शुरू हो चुका था। यह उसका एक हजार करोड़ से भी अधिक का प्रोजेक्ट था और वह इसमें अपना लगभग सबकुछ लगा चुका था। वह मशीनों के लिए बैंक से पहले ही लोन ले चुका था और वह अब निर्माण के लिए भी एक लोन लेने की कोशिश कर रहा था। उसके नए फ़ैक्टरी की मशीन जर्मनी के बेहतरीन इंजीनियरों द्वारा बनाई जा रही थी जो बनने के बाद सीधे बैंगलोर पहुंचा दी जाने वाली थी।

शेखर ने मनीष क्षीरसागर को एक कार्य सौंपा था। "बैंक के संपर्क में रहे और उन्हें इस लोन के लिए राज़ी करें।" शेखर ने कहा था और मनीष ने एक चिकनी चुपड़ी मुस्कान के साथ "जी हाँ" कहा था व सहमति में सिर हिलाया था।

"सर! क्या मैं अंदर आ सकता हूँ," एक बूढ़े आदमी ने पूछा जिसने दस साल पुराना फटा-पुराना सफारी सूट पहना था।

शेखर ने सिर हिलाया।

"कैलाशजी अंदर आइए," मनीष ने झूठी मुस्कान के साथ कहा।

कैलाश एक फ़ाइल के साथ अंदर दाख़िल हुए।

"वो फ़ाइल कहाँ है?" मनीष ने पूछा। "जो मैंने आपको दी थी।"

कैलाश ने उसे वह फ़ाइल थमा दी जैसे वह पहले से जानते थे उन्हें क्यों बुलाया गया था।

"सर, बैंक मैनेजर ने कहा *आपका लोन जल्द ही स्वीकृत हो जाएगा।*" मनीष ने फ़ाइल में से पढ़ा।

"क्या तुमने उन्हें बताया कि," शेखर ने पूछा, "हमें यह लोन जल्द से जल्द चाहिए वरना हमें बहुत बड़ा नुकसान हो जाएगा।"

"जी हाँ, सर," मनीष ने कहा। "और उन्होंने मुझे कहा कि..." वह फ़ाइल में ढूँढते हुए बुदबुदाया, "एक सेकंड सर।" उसने फ़ाइल के पेज पलटे।

"उन्होंने हमारी त्रैमासिक रिपोर्ट माँगी है।" कैलाश, सफारी सूट पहने बूढ़े आदमी, ने कहा। शेखर व मनीष दोनों ने उसकी ओर देखा।

मनीष ने शेखर की तरफ़ देखा। "जी सर! उन्होंने हमारी त्रैमासिक रिपोर्ट माँगी है।"

"क्यों?" शेखर ने पूछा।

मनीष ने फिर से फ़ाइल में देखा और जवाब खोजने लगा।

कैलाश ने कहा, "सर, वे जानना चाहते हैं कि एरोवॉक लोन का भुगतान कैसे करेगी।"

"जी सर," मनीष ने कहा।

"यह अभी तक क्यों नहीं किया गया?" शेखर ने पूछा। "और मनीष तुमने तो कहा था कि बैंक मैनेजर हमारे पक्ष में है।"

"जी सर," मनीष ने कहा और जवाब के लिए अपने आसपास देखा।

"सर, उन बैंक मैनेजर का महाराष्ट्र ट्रान्सफर हो गया है और नये बैंक मैनेजर, मिस्टर पिल्लई, काफी कठोर है। वे जानना चाहते हैं कि हम इस लोन का भुगतान कैसे करेंगे।"

शेखर ने कैलाश को घूरा। "क्या मैंने *तुमसे* पूछा है?"

कैलाश ने नज़रें नीचे झुका ली। उनके झुर्रिदार चेहरे पर भय दिखाई दे रहा था।

"दफ़ा हो जाओ यहाँ से," शेखर ने दाँत भींचते हुए कहा।

कैलाश ऑफ़िस से चले गए।

शेखर ने मनीष की तरफ़ देखा जो डरा हुआ लग रहा था। "बैंक मैनेजर से बात करो और उसे कैसे भी लोन के लिए जल्द से जल्द मनाओ," शेखर ने कहा और वह खड़ा होकर

खिड़की की ओर चल दिया। “और ऐसा क्यों हैं कि कैलाश सबकुछ जानता है और तुम कुछ नहीं?”

“सर!” मनीष भी खड़ा हो गया, “मैं थोड़ा सा व्यस्त था तो मैंने बैंक मैनेजर से बात करने का काम कैलाश को सौंप दिया था।”

शेखर मनीष की तरफ़ मुड़ा। “क्या तुम नहीं जानते यह मामला कितना अहम है? अगर तुम्हें किसी की मदद की ज़रूरत थी तो भी तुम्हारे पास कितने सारे विकल्प थे, कैलाश ही क्यों? उसे इन सब से दूर रखो।”

“माफ़ करें, सर।”

“उन्नति शर्मा से कहो वह इस मामले को देखें, मिस्टर पिल्लई या वह जो कोई भी है उससे बात करो और उन्नति से कहो उसे लोन के लिए किसी भी क़ीमत पर राज़ी करे।”

“जी सर,” मनीष ने कहा।

शेखर ने मनीष को देखा और कहा, “तुम जा सकते हो।”

मनीष दरवाज़े की तरफ़ बढ़ा और दरवाज़े के पास पलटकर उसने कहा, “सर, नई मुलाज़िम मिस हृषिता आपसे आपके घर पर मिलना चाहती है। क्या मैं उसे भेज दूँ।”

शेखर ने उसकी तरफ़ देखा और हामी में सिर हिलाया।

“आज रात?”

शेखर ने फिर से सिर हिलाया।

मनीष चला गया।

दो घंटे बाद, शेखर अपने ऑफ़िस में काम कर रहा था और टेबल के दाएँ कोने पर रखे फ़ाइलों के ढ़ेर से नीली फ़ाइल निकालने पर उसने गलती से सारी फ़ाइलें नीचे गिरा दी। उसने ज़मीन पर गिरी फ़ाइल पर एक निगाह डाली और उन्हें नज़रअंदाज़ करते हुए उसने नीली फ़ाइल खोली व उसे पढ़ने लगा। उसने अपनी टेबल पर रखी घंटी बजाई।

चपरासी दरवाज़ा पर आया और आदेश का इंतज़ार करने लगा। उसने ज़मीन पर पड़ी फ़ाइलें देखीं और उन्हें उठाने के लिए वह आगे बढ़ा।

“कैलाश को भेजो,” शेखर ने कहा।

फ़ाइलें ज़मीन पर ही छोड़कर चपरासी बिना देर किए लौट गया।

◆ ◆ ◆

2. स्वप्न

एक साठ साल के बुजुर्ग व्यक्ति कुर्सी पर बैठे थे और अपने सामने की टेबल पर रखी फ़ाइल के कवर पर निशान को एकटक देख रहे थे। उनके झुर्रिदार चेहरे पर घनी भौंहें और मूँछें थी जिनमें काले व सफ़ेद बाल का मिश्रण था। उन्होंने दस साल पुराना सफारी सूट पहना था।

"कैलाशजी..."

एक आवाज़ ने जैसे उन्हें उनके गहरे ख़्वाब से जगा दिया और उन्होंने अजनबी आवाज़ की दिशा में देखा।

एक सुंदर लड़की, जिसके बाल भूरे रंगे थे और उसमें सुनहरे रंग की धारियाँ थी, उनकी ओर देख रही थी। उस लड़की का चेहरा मेकअप से लदा हुआ था जिसमें मस्कारा, फाउन्डैशन, लालिमा, लिपस्टिक व लिपग्लॉस सभी की अधिकता थी। उसके नाख़ूनों पर उसके कपड़े के रंग की नेलपॉलिश लगी थी। उसके होंठों से मरून लिपस्टिक बह रही थी। वह हाड़-मांस की लड़की की जगह कृत्रिम गुड़िया लग रही थी जिसके चेहरे की लालिमा बनावटी थी।

"कैलाशजी..." उसने नकली मुस्कान के साथ उनका नाम पुकारा।

कैलाश खड़े हुए और उसकी तरफ़ पैर घसीटकर चल दिए।

"जी," कैलाश ने कहा।

लड़की ने मुस्कुरा कर अपने चमकदार सफ़ेद दाँत दिखाएँ। "कैलाशजी, क्या आप मेरा एक काम कर देंगे?" उसने अपने नकली लहज़े में मिश्री घोलते हुए कहा।

"मैंने आपको पहले कभी यहाँ नहीं देखा," कैलाश ने कहा।

"मैं यहाँ नई हूँ। मेरा इस कंपनी आज तीसरा दिन है। मैं हृषिता हूँ।"

कैलाश ने मुस्कान से उसका अभिवादन किया।

"क्या आपको कोई समस्या है," कैलाश ने पूछा। "मेरा मतलब है क्या आपको मदद चाहिए।"

हृषिता फिर से मुस्कुराई। उसने कहा, "यहाँ काम बहुत कठिन है और मुझे तो कुछ भी समझ नहीं आ रहा है लेकिन यह कोई समस्या नहीं है। मैं संभाल लूँगी।"

"फिर?"

"मुझे यह फ़ाइल मिस्टर कपूर को देना थी," उसने कहा।

कैलाश ने सिर हिलाया।

"क्या आप प्लीज़ यह फ़ाइल मिस्टर कपूर को दे देंगे?" हृषिता ने कहा और एक फ़ाइल कैलाश के हाथ में थमा दी। "मुझे यहाँ पर बहुत सा काम करना है।"

"आप मुझसे जो चाहती हो वह यह है कि मैं यह फ़ाइल जाकर मिस्टर कपूर को दूँ।"

उसने हामी में सिर हिलाया।

"क्या तुम यह नहीं जानती कि मैं तुम्हारा सीनियर हूँ? तुम्हें यहाँ महज़ तीन दिन हुए हैं और..." *क्या यह मुझे चपरासी समझ रही है?* कैलाश ने सोचा।

हृषिता ने कुछ नहीं कहा लेकिन उसके चेहरे पर कोई शर्म नहीं थी।

"तुमने अपने इतने जन्मदिन नहीं मनाएं होंगे जितनी मैंने इस कंपनी की सालगिरह मनाई हैं।" उन्होंने बिना देखे ही फ़ाइल वापस हृषिता के हाथ में थमा दी। "अपना काम ख़ुद करो।"

वे अपनी कुर्सी पर वापस आए और फिर से अपने ख़्यालों में खो गए और फिर से उनकी नज़रें फ़ाइल के उसी निशान पर थी जिसे वह कुछ समय पहले घूर रहे थे।

- - -

"कैलाशजी... कैलाशजी..."

"हाँ?" कैलाश ने नज़रें उठाकर चपरासी को देखा।

"क्या आप ठीक है?" चपरासी ने पूछा।

"मैं ठीक हूँ।"

"कैलाशजी, कपूर सर आपको बुला रहे हैं।"

ये अल्फ़ाज़ उनके कान में पड़ते ही उनका चेहरा उतर गया।

"मैं आ रहा हूँ।"

चपरासी वापस चला गया।

कैलाश खड़े होकर पैर घसीटते हुए शेखर कपूर के केबिन की तरफ़ चल पड़े। वे घबरा रहे थे क्योंकि वे जानते थे कि उनके मालिक उन्हें बिलकुल पसंद नहीं करते हैं और उनकी एक भी मुलाक़ात सुखद नहीं थी।

"क्या मैं अंदर आ सकता हूँ, सर," दरवाज़े पर कैलाश ने कहा।

शेखर ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी जैसे वह सुन ही नहीं रहा था। कैलाश ने फ़र्श पर पड़ी फ़ाइलों पर निगाह डाली।

"सर...?"

शेखर ने व्यस्तता से उनकी ओर देखा और फिर से अपने काम में लग गया। द्वार पर खड़े चिंतित कैलाश, शेखर की प्रतिक्रिया का इंतज़ार कर रहे थे।

"कैलाश।"

"जी सर..." कैलाश ने काँपती आवाज़ में कहा।

"मिस्टर मनीष ने जो फ़ाइल तुम्हें दी थी वह कहाँ है?" शेखर ने अपनी नज़रें लैपटॉप से नहीं हटाईं।

"सर..." कैलाश ने एक पल के लिए विचार किया, "सर, उन्होंने मुझे वह फ़ाइल मिस उन्नति को देने के लिए कहा था।"

"जाकर ले आओ।"

कैलाश कुछ पल स्तब्ध खड़े रहे जैसे वह आदेश समझ ही नहीं सके, फिर वे धीरे क़दमों से योजना विभाग की तरफ़ चल दिए। वे संगमरमर पर कुछ लड़खड़ाते हुए उन्नति की डेस्क तक पहुँचे लेकिन उन्नति वहाँ नहीं थी। उन्होंने उन्नति की डेस्क पर वह पीली फ़ाइल खोजी जो शेखर कपूर ने माँगी थी लेकिन वहाँ पर ऐसी कोई फ़ाइल नहीं थी।

कैलाश ने पास की टेबल की तरफ़ देखा। कुर्सी पर हृषिता बैठी थी।

"उन्नति कहाँ है?"

हृषिता ने कैलाश की तरफ़ देखा और अपने चमकदार होंठों पर झूठी मुस्कान फैलाकर कहा, "ओह, मुझे नहीं पता उन्नति मेड़म कहाँ है, लेकिन मुझे लगता है वह कॉफी पीने गई है।"

"मुझे त्रैमासिक योजना की फ़ाइल चाहिए," कैलाश ने कहा। "क्या तुम्हें पता है वह कहाँ है?"

कैलाश अपना वाक्य पूरा करते इससे पहले ही हृषिता के चेहरे के झूठे मधुर भाव पैशाचिक हो गए। "वह फ़ाइल मेरे पास है।" हृषिता ने कहा और उन्हें वही फ़ाइल थमा दी

जो उसने कुछ देर पहले मिस्टर कपूर के पास ले जाने के लिए कहा था। हृषिता ने उन्हें हिक़ारत से देखा।

"मैंने यह फ़ाइल तो उन्नति को दी थी," कैलाश ने कहा। "यह तुम्हारे पास कैसे आई?"

"मैं उन्नति मेड़म को असिस्ट कर रही हूँ।"

उन्होंने फ़ाइल ली और शेखर के ऑफ़िस की तरफ़ चल दिए। वे हृषिता के चेहरे पर अवहेलना की मुस्कान नहीं देखना चाहते थे।

"सर, क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?" कैलाश ने दरवाज़ा खटखटाया।

शेखर ने उन्हें अंदर आने का इशारा किया।

कैलाश चुपचाप अंदर आए और टेबल पर फ़ाइल रख दी।

"क्या मैं जा सकता-"

"फ़ाइल उठाओ," शेखर ने उनकी बात काटते हुए कहा।

कैलाश ने शेखर की ओर शून्यदृष्टि से देखा और पाया कि वह ज़मीन की ओर इशारा कर रहा था। वे स्तब्ध खड़े थे और कुछ भी करने के लिए अशक्त महसूस कर रहे थे।

शेखर ने नज़रें उठाकर कैलाश को घूरा।

"सर...?"

"पहले मुझे फ़ाइल चाहिए," शेखर ने कहा, उसकी आवाज़ में गुस्से की झलक थी।

कैलाश ने झुककर फ़ाइल बटोरी, उन्हें उठाकर टेबल पर रखा और इससे पहले शेखर कुछ कह सके वे केबिन से चले गए। अपनी टेबल तक जाते हुए उन्होंने अपने चेहरे पर गर्मी महसूस की लेकिन वे नहीं जानते थे कि जो वे महसूस कर रहे थे वह क्रोध था या ख़ुद पर तरस। उन्हें पसीना आ रहा था व उनके होंठ काँप रहे थे जैसे वे बस रोने ही वाले हों। एक समय था जब वे इसी कंपनी में जनरल मैनेजर थे। शेखर के पिता के लकवाग्रस्त होने के बाद जब शेखर ने कंपनी का भार सँभाला तब पहले ही महीने में उसने कैलाश को पदावनत कर दिया था। अब वे क्या थे? एक कर्मचारी या चपरासी?

आख़िरी दशक कैलाश के ज़िंदगी का सबसे बुरा वक़्त था। उन्होंने इन दस सालों में हर पल यह उम्मीद की थी कि समय बदलेगा लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उन्हें मैनेजर के पद से मनीष क्षीरसागर द्वारा प्रतिस्थापित किया गया था; मनीष एक बिलकुल प्रतिभाहीन युवक था जो उसके काम के बारे में कुछ भी नहीं जानता था। कैलाश कभी यह नहीं समझ सके कि शेखर ने उन्हें पदावनत क्यों किया, हालांकि उन्हें यह अंदेशा जरूर था कि इसके पीछे क्या कारण हो सकता था। मनीष शेखर को वो चीज़े देता था जिसकी उसे ज़रूरत थी।

कैलाश का मानना था कि अगर जनरल मैनेजर बनने के लिए उन्हें दलाल बनना पड़ेगा तो वे जीवनभर कर्मचारी ही बने रहना पसंद करेंगे।

जब से उनका ओहदा कम कर दिया गया था, उनकी तनख़्वाह दस गुना घट गई थी और उन्हें ज़्यादा काम भी नहीं दिया जाता था; उन्हें केवल एक टेबल से दूसरी टेबल तक फ़ाइलें लें जाने का ही काम करना होता था। इतना बुरा सलूक होने के बावजूद भी कैलाश ने कभी अपने आप को इतना साहसी नहीं पाया कि वे इस उम्र में फिर से एक नई शुरूआत कर सकें। वे सबसे ज़्यादा अपने काम की ही कमी महसूस करते थे।

◆ ◆ ◆

दोपहर ढाई बजे, जब शेखर की जेब में उसका मोबाइल फ़ोन बजा, वह काँप उठा। फ़ोन कॉल, काले बादलों का भँवर और चेतावनी की तस्वीरें उसके दिमाग़ में छा गई। उसने फ़िक्र और झिझक से फ़ोन निकाला; यह उसके दोस्त डॉ. गुप्ता का फ़ोन था। ऑफ़िस में, शेखर खड़ा होकर खिड़की तक गया और उसने बगीचे की तरफ़ देखा; बच्चे अब तक जा चुके थे।

“हैलो,” शेखर ने कहा, उसका ब्लैकबेरी उसके दाएँ कान पर था।

“हैलो यार,” एक जानी पहचानी आवाज ने कहा। “मैं एक कान्फ्रेन्स के लिए ऑस्ट्रेलिया जा रहा हूँ। पंद्रह दिन में आ जाऊँगा।”

“ओ. के.”

“क्या तेरे लिए ऑस्ट्रेलिया से कुछ लाना है?”

“मेरे लिए वहाँ से कंगारू ले आना।”

फ़ोन के दूसरी ओर परिचित आवाज़ की हँसी छूट गई। “मैं जानता हूँ तुझे जानवर पसंद हैं तो तु कोई कुत्ता या बिल्ली क्यों नहीं पाल लेता? सुन, मैं जा रहा हूँ लेकिन तेरी भाभी नहीं जा रही है, आरव की परिक्षा के कारण। बस यह कहना चाहता था कि उनका ध्यान रखना जब मैं यहाँ नहीं हूँ।”

“मैं ध्यान रखूँगा।”

“थैंक्स यार।”

शेखर मुस्कुराया, “वापस आकर मुझे फ़ोन करना।”

“ओके, बाई।”

शेखर ने फ़ोन रख दिया। उसने अपने दोस्त के परिवार, उसकी पत्नी व बेटे के बारे में सोचा। और यही वो कारण था जिस कारण से उसने शादी नहीं की थी। शादी, शेखर के

लिए, सिर्फ़ एक दायित्व थी। यह एक ऐसा रेस्तरां है जिसमें रोज एक ही प्रकार का भोजन मिलता हैं। उबाव! वह शादी क्यों करें जब उसे रोज अलग अलग और स्वादिष्ट भोजन मिल रहा था? शादी और कुछ नहीं सिर्फ़ सेक्स की आसान उपलब्धता थी और शेखर रोज एक ही औरत के साथ सोना नहीं चाहता था। वह शादी के लिए नहीं बना था।

शेखर वापस कुर्सी पर बैठ गया और उसने एक फ़ाइल खोल ली। एक मिनट तक फ़ाइल के पेज पलटने के बाद उसकी नज़र उसकी टेबल पर रखे काले फ़ोन पर पड़ी।

उसने फ़ाइल टेबल पर पटकी और फ़ोन का रिसीवर उठाकर एक नंबर डायल किया। "हैलो सर, शेखर कपूर बोल रहा हूँ," उसने एक झूठी मुस्कान अपने चेहरे पर फैला ली। "आप जानते है मैं क्या चाहता हूँ। मैंने फ़ीटलैंड शू कंपनी छः महीने पहले खरीदी थी लेकिन अब तक यह मेरे किसी काम की नहीं हैं। कर्मचारी हड़ताल पर हैं न तो वे ख़ुद काम कर रहे हैं और न ही नये कर्मचारियों को काम करने दे रहें हैं।" शेखर चुप होकर सुनने लगा। "मैं जानता हूँ कोर्ट ने उन्हें स्टे दे दिया हैं लेकिन..." शेखर ने उसके होंठ चाटे। "आप पुलिस अधीक्षक है, आप तो कुछ भी कर सकते हैं... मेरा यह काम कर दीजिए और आपको मुनासिब इनाम मिल जाएगा।" शेखर ने रिसीवर वापस रखा और बुदबुदाँया, *"निकम्मे साले।"*

◆ ◆ ◆

रात के आठ बजे, शेखर अपने बेडरूम में शराब पीते हुए समाचार देख रहा था और सरकार को कोस रहा था। उसने सफ़ेद कुर्ता पजामा पहना था, वह सोफे पर बैठा था और उसके सामने टेबल पर *जिम बीम* की बोतल, ग्लास, सोडा बोतल और बर्फ की बाल्टी में बर्फ रखी थी। शेखर ने एक बड़ा घूँट गटका और बेडरूम के अधखुले दरवाज़े पर दस्तक सुनी। उसने दरवाज़े की तरफ़ देखा जहाँ लाल कपड़ों में एक ख़ूबसूरत लड़की खड़ी थी।

"सर, मैं हृषिता हूँ।"

वुमन ऑन टॉप, शेखर ने सोचा और उसे अंदर आने के लिए कहा।

हृषिता अंदर आकर सोफे पर बैठ गई।

"तुमने कब जॉइन किया?"

"सोमवार।"

"एक ड्रिंक लेना चाहोगी?" शेखर ने पूछा।

"स्मॉल।"

शेखर ने उसे कमरे के कोने में स्थित मिनी-बार से एक ग्लास लाने को कहा फिर उसमें ड्रिंक व सोडा डालकर ग्लास उसे थमा दिया।

- - -

सुबह करीब चार बजे, भ्रमित शेखर ने धीरे से आँखें खोली। वह उसके बिस्तर में था। उसने अपने दाईं तरफ़ देखा और किसी को अपने पास सोता हुआ पाया जिसकी पीठ उसके ओर थी। वह धीरे से पलंग से उतरा, दूसरी ओर गया और उसका चेहरा देखा, वह लड़की हृषिता थी। *मैं यह कैसे भूल गया?* शेखर ने सोचा।

शेखर ने घड़ी देखी और कराहा। शेखर नहीं जानता था कि किस चीज़ ने उसे जगा दिया था लेकिन उसकी आँखों में अब नींद नहीं थी। उसने टेबल पर रखी *जिम बीम* की खाली बोतल व ग्लास पर निगाह डाली, दरवाज़ा खोलकर बाहर आ गया और बालकनी में ध्यानमग्न खड़ा रहा। वह नहीं जानता था वह अब क्या करने वाला था। पंद्रह मिनट बाद भी वह, विचारपूर्ण, बालकनी में टहल रहा था। उसने पास के कमरे के दरवाज़े की तरफ़ देखा, चारों ओर देखने के बाद उस कमरे की तरफ़ बढ़ा और उसने धीरे से बिना आवाज़ किए दरवाज़ा खोला। कमरे के अंदर, अंधकार में एक बूढ़ा बिस्तर पर स्थिर पड़ा था जिसे देख शेखर ने अपनी धड़कने बढ़ती हुई महसूस की और उसने अपने कानों पर ज़ोर देकर वृद्ध के खर्राटे सुनने की कोशिश की जो उसके जिवीत होने का इकलौता सबूत था। उस वृद्ध को देखकर और उसके खर्राटे सुनकर शेखर ने एक अजीब सी बेचैनी महसूस की। वह वृद्ध उसके पिता, बलराज कपूर, थे जो लकवाग्रस्त थे और उन्होंने अपने जीवन के पिछले दस साल इसी पलंग पर बिताए थे।

व्याकुल शेखर ने फिर से दरवाजा बंद कर दिया और बालकनी में टहलने लगा। उसने हवा में एक अजीब चीज़ की अनुभूति की-- *भय?*

यह दृश्य दुर्लभ नहीं था। शराब की बोतल खोलने से लेकर बालकनी में टहलना और अपने पिता के खर्राटे सुनना उसका दैनिक कार्य था। जागते हुए रातें बिताना और बेचैनी से बिस्तर में लगातार करवटें बदलने से उसे नफ़रत थी। इस समस्या के लिए उसने डॉ. गुप्ता और अन्य कई डॉक्टरों से सलाह भी ली थी और कई प्रकार के इलाज और जाँचें भी की गई थी लेकिन उसे इस समस्या से कभी निजात नहीं मिला। कई बार तो शेखर इसीलिए जाग जाता था क्योंकि उसे ऐसा लगता था जैसे कोई अदृश्य हाथ उसका गला घोंट रहा है।

साढ़े पाँच बजे वह अपने बिस्तर पर गया व हजारों दिशाहीन ख़्यालों के बाद उसकी आँख लग गई।

◆ ◆ ◆

अंधेरे में, शेखर भौंचक्का खड़ा था और वह यह समझने में असमर्थ था कि वह कहाँ है। जो लेशमात्र रोशनी उसकी आँखों तक पहुँच रही थी वो उसके सिर के ऊपर लटक रहे हीरे के बड़े से झूमर से आ रही थी। इस हल्की रोशनी में वह अपने पैरों के नीचे की फ़र्श देख

सकता था जो काले व सफ़ेद संगमरमर, चमकते हीरे, व काले व सफ़ेद मोतियों का बेजोड़ मेल था और सब मिलकर एक फूल बना रहे थे--एक कमल।

यह खज़ाना देख शेखर की आँखें चमक उठी और उसके भीतर के बिज़नेसमेन ने इसकी क़ीमत आँक लीं थी--लगभग सौ करोड़। उसके चेहरे के भाव उलझन में बदल गए--*मैं कहाँ हूँ?* इस सवाल ने उसे बेक़रार कर दिया।

उसने अपने चारों तरफ़ देखा; अंधेरे ने उसे निगल लिया था, और चमकते हीरो के अलावा वहाँ कोई रोशनी नहीं थी। उसने ज़्यादा देखने की कोशिश में अपनी आँखों पर ज़ोर दिया लेकिन अभेद्य अंधकार ने इसकी मंजूरी नहीं दी। कमरे में हल्की कँपकँपा देने वाली हवा चलने लगी; मांस जलने की दुर्गंध ने उसे साँस रोकने पर मजबूर कर दिया। उसकी उलझन और अधिक बढ़ गई और अचानक गुर्राहट से तो जैसे उसकी साँस ही अटक गई; एक गुर्राहट--शायद किसी की साँस की आवाज़। उसके रोंगटे खड़े हो गए; उसने आगे बढ़ने की कोशिश की लेकिन उसके पैर इतने भारी थे कि हिल भी नहीं पा रहे थे। वह अपना होंठ काटते हुए स्तब्ध खड़ा था और उसकी आँखें फटी रह गई थी। उसने फिर से वही आवाज़ सुनी और एक अनिष्टसूचक भावना ने उसे घेर लिया।

गहरी साँस खींचकर, और अपनी पूरी ताकत इकट्ठा कर उसने अपना पैर आगे बढ़ाया। उसने फिर से वही गुर्राहट सुनी और उसे फिर से वही भयावह एहसास हुआ। अचानक एक कानफोडू दहाड़ और उसके अदृश्य बल ने उसे पीछे भव्य फ़र्श पर फेंक दिया। शेखर दहशत में था। वह यह जानता था कि उसे किसी चीज़ ने नहीं छुआ था जिसने उसे धकेला वह एक अस्पृश्य अदृश्य बल था जो बिजली की तरह गरजा था। भव्य फ़र्श पर पड़े हुए उसने कुछ होने का इंतज़ार किया, उसके पैर दहशत के मारे काँप रहे थे। अंधेरे में कुछ हरकत हुई।

अंधकार से एक विशालकाय हाथ निकला जिसने शेखर के सिर को दबोच लिया और इसके नाख़ून उसके सिर की खाल को लगभग चीरने ही वाले थे। उसकी आँखें उभर गई। उसने एक भयानक, भारी व कर्कश आवाज़ सुनी--*दोषी।* उसकी खोपड़ी चरमराई।

- - -

अपने आरामदायक बिस्तर पर शेखर ने आँखें खोली और माथे पर चमक रही पसीने की बूँदों को अपनी हथेली से पोंछा। उसकी उभरी हुए आँखें सुर्ख लाल थी और पसीने से सना उसका मोटा चेहरा सफ़ेद पड़ गया था। *क्या यह एक सपना था?* उसने अपने सिर को छुआ--अभी भी अभंग। उसने आह भरी और बैठा होकर उसने बिस्तर की दूसरी तरफ़ देखा जो खाली था, हृषिता जा चुकी थी।

तुमने अपने सपने में जो फ़र्श देखा है उसकी क़ीमत क्या होगी? एक भारी मग़रूर आवाज़ उसकी खोपड़ी में चीख़ीं। शेखर ने उसकी आँखें व भौंहें सिकोड़कर सोचा, *यह*

कैसे हो सकता है? किसी के भी सपने के बारे जानना असंभव हैं। फिर यह कैसे हुआ?

एक घंटे बाद शेखर अपने कमरे में लंबे आईने के सामने खड़ा था और आइने से जो व्यक्ति झाँक रहा था वह पैंतीस से अड़तीस साल का मोटा और छोटे कद--पाँच फूट चार इंच--का था। उसके बाल भूरे, आँखें काली थी और उसने भूरे रंग का कोट पहना था जो उसकी हाल ही बढ़ी तौंद को ढाकने की कोशिश कर रहा था। प्रतिबिम्ब में खड़े उस आदमी ने शेखर की तौंद की तरफ़ उदासी से देखा। उसने सपने के बारे में सोचते हुए अपनी फ्रेंच कट दाढ़ी पर कंघी फेरी, *इस महीने में तेरहवीं बार, क्या मुझे किसी से बात करनी चाहिए?* लेकिन उसके पास बात करने के लिए कोई नहीं था। उसने अपने एक मात्र दोस्त डॉ. गुप्ता के बारे में सोचा जो फिलहाल देश में नहीं थे। वह जाने के लिए पलटा, अपना मोबाइल फ़ोन जेब में रखते हुए कमरे से बाहर निकल गया और इस वक़्त भी वह सपने, फ़ोन कॉल व रहस्यमयी घटना के बारे में ही सोच रहा था। जब वह बालकनी में चल रहा था तब उसके इटालियन चमड़े के जूते किकिया रहे थे। उसका घर भूरे पत्थर का एक भव्य मकान था जिसमें अखरोट की लकड़ी का फ़र्श था।

बलकनी में उसने अपने पिता के कमरे के अधखुले दरवाज़े की तरफ़ देखा और बिना किसी आवाज़ के उसने चुपके से अंदर झाँका। उसके पिता बिस्तर पर पड़े हुए थे। उसने उनकी तरफ़ पाँच सेकंड तक देखा और उनके दाएँ हाथ की तर्जनी में हलचल हुई। *हाँ, वह ज़िंदा है।* वह सीढ़ियों की तरफ़ बढ़ गया और चिनार की लकड़ी से बनी सीढ़ियाँ उतर कर नीचे आ गया।

किचन में एक वृद्ध नौकर, मनोहर, शेखर के लिए नाश्ता बना रहा था--शेखर के पसंदीदा आलू के पराठे। उसने गर्म पराठा तवे पर पलटा। मनोहर अब यह उम्मीद छोड़ चुका था कि यह घर फिर से वैसा हो पाएगा जैसा यह हुआ करता था। अब इस घर में बातों की, गानों की और हँसी की कोई आहट सुनाई नहीं देती थी। अब इस घर में जो सुनाई देता था वह था सिर्फ़ एक कानफोडू सन्नाटा। मनोहर इस घर में तब से था जब शेखर तीन साल का था, उसने इस घर को इसके सबसे अच्छे समय में, मुस्कुराते और गुनगुनाते हुए देखा था। बलराज कपूर एक ख़ुशमिज़ाज इंसान थे और उनकी पत्नी अनिता कपूर की आवाज़ बहुत मधुर थी। वह हमेशा गाती और गुनगुनाती रहती थी लेकिन अब सबकुछ बदल चुका था। मनोहर ने फिर से पराठे को तवे पर पलटा। बलराज कपूर जो कभी बहुत ख़ुशदिल थे अब स्वयं बैठ भी नहीं सकते थे और न ही स्वयं कुछ खा सकते थे। वे अब सिर्फ़ हड्डियों का एक थैला थे, श्य्याग्रस्त और विषादपूर्ण। मनोहर को सबसे ज़्यादा फ़िक्र जिस चीज़ की थी वह उनके मालिक की सेहत नहीं थी वह उनकी उदासी थी। बलराज कपूर अब शायद ही कभी बोलते थे, इसका कारण उनके शरीर के अधिकतम हिस्सों के साथ उनकी आधी

जीभ का लकवाग्रस्त होना नहीं था। इसका कारण उनके दिल की मायूसी थी जिसने उनको इतना नाउम्मीद बना दिया था कि उन्हें अपना जीवन नीरस लगने लगा था।

मनोहर ने पराठे व चटनी को एक प्लेट में रखा और उसे ले जाकर वह ड्रॉईंग रूम में शेखर का इंतज़ार करने लगा। शेखर भूरा सूट व भूरे इतालवी चमड़े के जूते पहने नीचे आया और बिना दूसरी निगाह मनोहर पर डाले अपनी माँ की तस्वीर के दर्शन कर दरवाज़े की तरफ़ बढ़ गया।

"शेखर बाबा, नाश्ता कर लो," मनोहर ने कहा। "तुम्हारे पसंदीदा आलू के पराठे।"

शेखर रूका, पलटा और कहा, "मुझे नाश्ता नहीं करना।"

"शेखर बाबा, आप अपना ध्यान नहीं रखते, आप समय पर कुछ खाते भी नहीं।"

"काका मैं अपना ध्यान रख सकता हूँ। आपको चिंता करने की ज़रूरत नहीं है।"

शेखर जाने के लिए पलटा।

मनोहर को अच्छा नहीं लग रहा था। वे इस घर का माहौल बदलना चाहते थे और इसके लिए उन्होंने बहुत कोशिशें भी की थी लेकिन कही कुछ नहीं बदल रहा था। कोई भी बदलना नहीं चाहता था ना ही शेखर ना ही उसके पिता। वे जानते थे शेखर के पिता ऐसा क्यों कर रहे थे लेकिन उन्हें बिलकुल अंदाजा नहीं था कि शेखर ऐसा क्यों कर रहा था।

शेखर दरवाज़े पर था। मनोहर ने अनिश्चितता से कहा, "शेखर बाबा, क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकता हूँ?"

शेखर पलटा और बेमन से बोला, "पूछो।"

मनोहर नहीं जानते थे कि उन्हें यह सवाल पूछना चाहिए या नहीं लेकिन यह सवाल उनके दिल पर एक बोझ था इसलिए उन्होंने कहा, "शेखर बाबा, मैं आपसे एक चीज़ जानना चाहता हूँ कि... आप... आप अपने पिता से बात क्यों नहीं करते?"

शेखर की शक्ल पर साफ़ दिख रहा था कि वह इसका जवाब नहीं देना चाहता। मनोहर ने उसकी तरफ़ देखा और जवाब का इंतज़ार किया।

शेखर बिना कुछ बोले वहाँ खड़ा रहा।

"अगर आप यह जान बुझकर कर रहे हैं," मनोहर ने पूछा, "तो इसके पीछे जरूर कोई वजह होगी। आप मरणशय्या पर पड़े अपने पिता से बात नहीं कर रहे हैं।" मनोहर शेखर को देखते रहे।

"मैं उनसे बात नहीं करता क्योंकि..." शेखर ने कहा व कुछ देर रूककर उसने फिर से कहा, "मैं उनसे *नफ़रत* करता हूँ।"

“आप अपने पिता से नफ़रत करते हैं?” इस रहस्योद्घाटन से सदमे में मनोहर ने पूछा, “क्यों?”

“क्योंकि उन्होंने मेरी माँ की हत्या की थी।” शेखर ने ऊँचे स्वर में कहा। “मैं उनसे नफ़रत करता हूँ, उन्होंने मेरी माँ की हत्या की है।”

“उन्होंने आपकी माँ की हत्या नहीं की थी।” मनोहर अपने कानों पर यकीन नहीं कर सके, उन्होंने कहा। “वह एक दुर्घटना थी!”

“वह कोई दुर्घटना नहीं थी,” शेखर चीख़ा। “उन्हें कार चलाना नहीं आती थी फिर वे कार क्यों चला रही थी और वे कहाँ जा रही थी और डैड उनके साथ क्यों नहीं थे? क्योंकि वे पैसा बनाने में व्यस्त थे!”

“यह सच नहीं है,” मनोहर ने कहा। “बड़े साहब मेमसाहब से बहुत अधिक प्यार करते थे। इस हादसे ने तो उनकी पूरी ज़िंदगी तबाह कर दी।”

“उन्होंने ही मेरी माँ का कत्ल किया था,” शेखर बड़बड़ाया।

“शेखर बाबा, उन्हें गुज़रे चौबीस साल हो चुके हैं,” मनोहर ने कहा। “आपने और बड़े साहब ने उन्हें खो दिया, अब जाने दीजिए। वे अपनी मृत्यु शय्या पर हैं, उनसे बात करें, उन्हें आपकी ज़रूरत हैं।”

माँ की मौत के बाद शेखर ने अपने पिता से बात करना बंद कर दिया था लेकिन दस साल पहले, बलराज कपूर के लकवाग्रस्त होने के बाद से तो वे अपनी ही औलाद का चेहरा तक नहीं देख सके थे।

“प्लीज़, उनसे बात करें,” मनोहर ने विनती की।

शेखर ने कोई जवाब नहीं दिया; उसने मनोहर की आँखों में देखा और दरवाज़े से बाहर चला गया।

मनोहर की आँखें फैल गई और वे एक शब्द भी नहीं कह सके। उन्होंने शेखर की आँखों में कुछ देखा, ऐसा कुछ जिसकी उन्होंने तब बिलकुल उम्मीद नहीं की थी जब वे बचपन में उसे खिलाते थे। शेखर की आँखों में साफ़ दिख रहा था कि वह *सिर्फ़ एक नौकर है।*

मनोहर ने ट्रे की तरफ़ देखा और छोटे शेखर को याद किया--उसका मोहक चेहरा, उसकी शरारतें, उसकी प्यारी बातें। वे किचन में गए और तैश में उन्होंने पराठा और चटनी कूड़ेदान में फेंक दिए।

◆ ◆ ◆

3. पत्र

यह गुरूवार था। शेखर उसके ऑफ़िस में फ़ोन पर बात कर रहा था लेकिन वह कुर्सी पर नहीं बल्कि टेबल पर बैठा था। वह रोमांचित था क्योंकि उसकी नई फ़ैक्टरी का निर्माण बहुत अच्छा चल रहा था। उसने रिसीवर वापस रखा और वह ऑफ़िस में टहला।

आधे घंटे बाद, शेखर एक फ़ाइल में नाक गड़ाए बैठा था। वह सालों से अपने बिज़नेस को फैलाने की योजना बना रहा था और आख़िरकार उसने एक साहसी क़दम उठा लिया था। यह क़दम उसके उद्योग को एक नई ऊँचाई पर ले जाएगा और इसके बाद सिर्फ़ भारत ही नहीं बल्कि पूरे एशिया में कोई भी उसका मुकाबला नहीं कर पाएगा। *आप गलत थे डैड। मैं कामयाब हूँ और आपसे अच्छा बिज़नेस चला रहा हूँ,* शेखर ने सोचा। उसे असफलता बर्दाश्त नहीं थी; यह उसे उसके पिता के गुस्सैल लफ़्ज़ों की याद दिलाते थे। 'तुम अपने ज़िंदगी में कुछ नहीं कर पाओगे। तुम असफल ही रहोगे।' शेखर ने उन्हें गलत साबित कर दिया था। अब ऐरोवॉक की विकास दर उसके पिता के समय से बेहतर थी।

फ़ाइल टेबल पर रखकर शेखर ने फ़ाइलों के ढ़ेर में एक दूसरी फ़ाइल खोजी और जब वह ऐसा कर रहा था तब उसने कुछ ग़ैर मामूली पाया--एक लिफ़ाफ़ा, मोती सा सफ़ेद एक लिफ़ाफ़ा। उसने अपना नीचला होंठ चाटा। उसने फ़ाइलों के बीच से लिफ़ाफ़ा खींचकर निकाला और उस पर लिखे दो चमकीले हरे शब्द पढ़े--*द्वितीय चेतावनी।* उसने सोचा, *क्या यह कोई मज़ाक है?* लेकिन वह जानता था कि प्रथम चेतावनी कोई मज़ाक नहीं लग रही थी। उसने लिफ़ाफ़ा पलटा; वहाँ और कुछ नहीं था सिवाय शब्द *द्वितीय चेतावनी* के।

शेखर ने लिफ़ाफ़ा खोला, एक कोमल रेशम से काग़ज़ को खींच कर बाहर निकाला और जब उसने ऐसा किया उसने महसूस किया जैसे उसके ऑफ़िस की हवा विषादपूर्ण ऊर्जा में परिवर्तित हो गई। उसे ऐसा लगा जैसे उसके सिर के ऊपर कुछ था और जब उसने ऊपर देखा वह हैरान रह गया। वह हक्का बक्का था क्योंकि उसके ऑफ़िस के अंदर उसके सिर के कुछ फ़ुट ऊपर काले बादल मंडरा रहे थे। *यह कैसे संभव था?* शेखर ने सोचा। उसने काग़ज़ की तरफ़ देखा जिस पर हरी चमकीली स्याही से कुछ लिखा था।

मिस्टर शेखर बलराज कपूर,

आपको सूचित किया जाता है कि प्रथम चेतावनी के बावजूद आपके अनुचित कार्य बंद नहीं हो रहे हैं। ये बंद कर दें अथवा ये आपको बहुत बड़ी परेशानी में डाल देंगे। यह आपका दूसरा संदेश है। हमें आशा है कि आप हमें तीसरा व अंतिम संदेश भेजने की वजह नहीं देंगे।

धन्यवाद

न्याय की नगरी

शेखर फटी आँखों से चिट्ठी को घूरता रहा और उसकी आँखों के सामने फ़ोन कॉल तथा बादलों के बवंडर की जीवंत छवि छा गई। जो रोमांच वह कुछ समय पहले तक महसूस कर रहा था वह काफ़ूर हो गया था और उसे लगा जैसे सबकुछ अज्ञात भय की चादर के पीछे छिप गया हो। उसने ऊपर देखा और उसके सिर के ऊपर के बादल घूमने लगे और शेखर की साँस रूक गई।

क्या मैं पागल हूँ? यह कैसे संभव है? उसने सोचा।

शेखर की उलझन अब ग़ुस्से में बदल गई थी, गुस्सा किसी अज्ञात चीज़ के लिए।

लिफ़ाफ़े पर लिखे *द्वितीय चेतावनी* को उसने ग़ौर से देखा और उसे ऐसा लगा जैसे शब्द *चेतावनी* ने राक्षसी नृत्य किया। उसने ज़ोर से आँखें मिचमिचाई और फिर से शब्द की तरफ़ देखा लेकिन वह निष्प्राण और अचल था।

एक शब्द कैसे नाच सकता है? क्या मैं एक बेवकूफ़ हूँ जो ऐसा सोच रहा हूँ?

शेखर ने क्रोध मिश्रित भय महसूस किया। उसने चिट्ठी, और उस पर लिखे हरे लफ़्ज़ों पर निगाह डाली और चिट्ठी को चार भागों में फाड़ कर टेबल पर फेंक दिया। फटे हुए काग़ज़ के टुकड़ों ने स्वतः ही आग पकड़ ली और नीली-हरी लपटों में टेबल पर जलने लगे। शेखर भौंचक्का यह देखता रहा। उसके सिर पर बादल घूमने लगे और जाकर जलती हुई चिट्ठी में घुल गए। कुछ सेकंड बाद वहाँ कुछ भी असामान्य नहीं था, न बादल, न गंध और न ही राख। वहाँ सफ़ेद लिफ़ाफ़े के अलावा कुछ भी नहीं था।

शेखर ने साँस खींची लेकिन हवा में कोई गंध नहीं थी। उसने टेबल की दराज़ में लिफ़ाफ़ा फेंका और सिर पकड़कर बैठ गया क्योंकि उसका सिर दर्द कर रहा था। उसे लगा जैसे उसका सिर फटने वाला हैं। उसने एक ग्लास पानी से *सेरिडॉन* निगल ली।

पाँच मिनट बाद, शेखर ने चपरासी को बुलाया और पूछा, "क्या मेरे लिए कोई चिट्ठी आई थी?"

"नहीं सर।"

"आज, कल, परसों, कभी भी?"

"सर, मैंने लंबे समय से आपके लिए कोई चिट्ठी नहीं देखी।" चपरासी ने जवाब दिया।

"ठीक है," शेखर ने कहा।

दस मिनट बाद, शेखर एक फ़ाइल को ज़ोर से बंद करके खड़ा हुआ और ऑफ़िस में टहलने लगा। वह किसी भी चीज़ में ध्यान नहीं लगा पा रहा था। वह न चाहते हुए भी चिट्ठी और फ़ोन के बारे में सोच रहा था।

शाम को, शेखर अपने दाएँ हाथ में एक फ़ाइल लिए ऑफ़िस से बाहर आया और योजना विभाग में घुस गया। कर्मचारियों ने खड़े होकर उसका अभिवादन किया जिससे उसका सीना गर्व से फूल गया। उसने पहले ही सभी विभाग के प्रतिनिधियों को बुलवा लिया था। उसने मंच पर जाकर सभी पर नज़र डाली।

"प्लीज़ ध्यान दें," शेखर ने कहा, और पचास जोड़ी आँखें उसे ताकने लगी। "यह बताते हुए आज मुझे बहुत ख़ुशी हो रही है कि हम भारत में सबसे ज़्यादा बिकने वाला शू ब्रान्ड बन गए हैं। पहले स्थान पर यह हमारा लगातार पाँचवाँ साल होता अगर पिछले साल फ़ीटलैंड के कारण हम दूसरे स्थान पर नहीं होते।"

शेखर की नज़र एक महिला पर पड़ी, जो लगभग तीस वर्ष की थी और शायद उसका नाम अनुष्का था। *डॉगी स्टाइल,* उसने सोचा। उसने फिर से फ़ाइल पर नज़र डाली, और कहा, "इस साल हम पहले स्थान पर हैं और इस साल ऐरोवॉक निश्चित रूप से *बिज़नेस वर्ल्ड मैग्ज़ीन* में होगा और हर साल की तरह इस साल भी हमारा सबसे अधिक बिकने वाला जूता *कम्फी* ही है।"

सभी ने तालियाँ बजाई; उन्नति ने बेमन से और कैलाश ने उत्साहित होकर।

"हमारी नई फ़ैक्टरी जल्द ही शुरू हो जाएगी और उसके बाद कोई भी हमारी बराबरी नहीं कर पाएगा," शेखर ने कहा। "हमारी तिमाही रिपोर्ट बहुत अच्छी ग्रोथ दिखाती है। आप सभी को बधाई!"

जैसे ही शेखर ने बोलना बंद किया उसने अपने कर्मचारियों के सिर के ऊपर हवा में एक विशाल 'च' देखा। उसका मुँह अचम्भे से फटा रह गया था; तुरंत ही उसे अपनी प्रतिक्रिया का अहसास हुआ और उसने अपने आप को नियंत्रित कर लिया और विशाल 'च' हवा में घुल गया।

'च' मतलब चेतावनी...? शेखर ने सोचा।

◆ ◆ ◆

शुक्रवार सुबह, शेखर कैडिलैक से ऐरोवॉक की तरफ़ जा रहा था और जब वह दाएँ मुड़ा तो उसने पाँच बच्चों को एक गड्ढ़े के पास कुछ करते हुए देखा। वह धीमा होकर उन्हें देखने लगा। बच्चे गड्ढ़े में रस्सी डाल रहे थे। जिज्ञासावश वह कार रोककर उतरा और बच्चों की तरफ़ बढ़ गया। उसने देखा बच्चे पाँच फ़ुट गहरे गड्ढ़े में गिरे एक सफ़ेद कुत्ते के पिल्ले को बचाने की कोशिश कर रहे थे। शेखर को एक सुखद दुर्लभ एहसास हुआ लेकिन वह नहीं जानता था यह दया थी या उस छोटे से पिल्ले के लिए प्रेम था। उसने अपना कोट उतारा, कमीज़ की आस्तीनें चढ़ाई और बिना कुछ सोचे धीरे से गड्ढ़े में उतर गया। पिल्ला डर गया और डर के मारे उसने ख़ुद को कूड़े के ढेर के पीछे छिपा लिया। शेखर ने पिल्ले को पुचकारा और उसे अपनी गोद में उठा लिया। "आराम से दोस्त तुम अब सुरक्षित हो," शेखर बुदबुदाया और हवा को चूमा व पिल्ला बच्चों को सौंप दिया। बच्चे पिल्ले को लेकर भाग गए और उन्होंने उसका नाम जार्विस रख दिया। शेखर मुस्कुराया, उसने अपना दाहिना पैर गड्ढ़े में एक पत्थर पर रख ख़ुद को ऊपर की ओर धकेला लेकिन उसका जूता पत्थर से फिसल गया और वह लगभग गिरते गिरते बचा लेकिन ख़ुद को गिरने से बचाने में उसको बाएँ हाथ की हथैली पर खरोंच आ गई। उसने फिर से पैर पत्थर पर रखा और पाया कि उसके जूते का तला फट गया और लटक रहा था। "हे भगवान!" वह बड़बड़ाया और उसने ख़ुद को बाहर धकेला। *पहले ही ग्राहक के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंस के लिए मुझे देर हो गई है।*

शेखर तेज़ क़दमों से कार की ओर बढ़ा, कोट पहना और कार से ऐरोवॉक की तरफ़ चल दिया। दस मिनट बाद, उसने सड़क के किनारे छतरी की छाया में जूते सिलते एक मोची को देखा और उसने कैडिलैक रोक दी। *फटे जूते पहने ऐरोवॉक जाना अच्छा विचार नहीं लगता। आख़िरकार मैं एक जूते की कंपनी का मालिक हूँ।*

शेखर कैडिलैक से बाहर निकलकर मोची के पास गया जो एक गरीब भिखारी की तरह लग रहा था। वह एक दुबला-पतला आदमी था जिसकी काली लंबी घनी दाढ़ी व झबरीले बाल थे।

"क्या तुम इसे ठीक कर सकते हो?" शेखर ने अपना दायाँ पैर ऊपर उठा कर अपने जूते का फटा हुआ तला उसे दिखाया।

मोची उसे एकटक देखता रहा लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया।

"ओए! क्या तुम इसे ठीक कर सकते हो?" शेखर ने पूछा, इस बार और ज़ोर से और ज़्यादा बेअदबी से।

मोची ने पलकें झपकाई, शेखर को देखा व हामी में सिर हिलाया और जूता लेने के लिए हाथ बढ़ाया। शेखर ने अपना दायाँ जूता खोलकर दाएँ पैर से उसकी ओर सरका दिया। मोची ने जूता उठाया और एक मिनट तक उसका अध्ययन कर कहा, "क्या यह इतावली चमड़ा है?"

शेखर ने उसकी ओर देखकर हुंकार भरी।

"इसे ठीक करने में मुझे आधा घंटा लगेगा," मोची ने कहा।

"नहीं, मैं जल्दी में हूँ," शेखर ने कहा। "इसमें ज़्यादा से ज़्यादा पाँच मिनट लगना चाहिए।"

"यह इतावली चमड़ा है और इसे अच्छी तरह सिलने में मुझे आधा घंटा लगेगा।"

शेखर ने दूसरे जूतों की तरफ़ देखा, कुछ वहाँ सिलाई के लिए थे और कुछ नए जूते मोची ने सिलकर बेचने के लिए रखे थे।

"मेरे पास इतना वक़्त नहीं है," शेखर ने कहा। "मुझे वो नए वाले दे दो।" उसने भूरे चमड़े के जूते की ओर इशारा किया।

मोची ने उसके पैरों की तरफ़ देखा और उसे उसकी नाप के बिलकुल वैसे ही जूते निकालकर दें दिए। शेखर ने उन्हें पहना और पाया कि यह उसके लिए बिलकुल सही नाप थी।

"इन्हे सिल दो, मैं शाम को इन्हे लें जाऊँगा," शेखर ने कहा।

"जी सर।"

"कितने?"

"सात सौ।"

शेखर ने उसे सात सौ रूपये दिए और कार में बैठकर वहाँ से चल दिया। उसे जूते बहुत आरामदायक लगे। इस तरह के जूते ऐरोवॉक 2500 से 5500 रूपये तक बेचती थी। शेखर को जूते पसंद आए थे जो कोई मामूली बात नहीं थी।

वह ऐरोवॉक की तरफ़ बढ़ रहा था। उसकी कार एक बहुत बड़े ज़मीन के टुकड़े के पास से गुज़री जिसकी क़ीमत दो सौ करोड़ थी। *यह ज़मीन मेरी है,* शेखर ने अपना सिर गर्व से ऊपर उठा लिया। यह ज़मीन का टुकड़ा उसने दो साल पहले ख़रीदा था और तभी से वह जिसके साथ भी व्यापार करता था उसे यह ज़मीन ज़रूर दिखाता था। उस ज़मीन के टुकड़े के तुरंत बाद ही एक जर्जर इमारत थी। शेखर इस जीर्ण-शीर्ण संरचना से नफ़रत करता था जो उसकी जायदाद की खूबसूरती को कम कर रही थी। इस खंडहर पर एक बोर्ड लगा था

जिस पर लिखा था *हेल्पिंग हेण्ड्स।* उसने कभी-कभार यहाँ पर कुछ लोगों को भी देखा था।

कितने फ़ुरसती लोग हैं इन्हें और कोई काम नहीं हैं इसलिए चैरिटी कर अपना वक़्त बिताते हैं, शेखर हिक़ारत से मुस्कुराया। उसे लगता था जो भी लोग भिखारियों या अन्य किसी को भी पैसा या और कुछ देते हैं वे उन्हें आलसी बना रहे हैं। वह ऐसे कई लोगों को जानता था जो उसके साथ व्यापार करते थे और अपनी मेहनत की गाढ़ी कमाई का हिस्सा भिखारियों और निकम्मों में बाँट कर उन्हें और कामचोर बनाते थे। उसने कभी किसी को नहीं बताया लेकिन वह जब भी उन्हें देखता था वह उन पर हँसता था।

◆ ◆ ◆

ग्राहक के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंस अच्छी रही और माँग पहले से ही बढ़ने लगी थी।

ऑफ़िस में, पुष्पमाला चढ़ी माँ की तस्वीर को एकटक देखने के बाद, अपने गले में भावना की गाँठ महसूस करने के बाद, वह वापस अपनी आरामदायक कुर्सी पर बैठा था और *दैनिक भास्कर* अख़बार पढ़ रहा था।

> अमरीकी राष्ट्र-पति का भारत दौरा अगले महीने। हमारे प्रधानमंत्री ने कहा कि यह दौरा दोनों देशों के रिश्ते व व्यापार मज़बूत करेगा।
>
> यह एक आत्महत्या थी... मीरा उपाध्याय जो आशुतोष उपाध्याय की पत्नी थी नौ महीने पहले अपने ही बेडरूम में पंखे से झूलती पाई गई थी। चिकित्सकों ने उनके अंग रसायनिक जाँच के लिए भेजे थे और जाँच में कोई भी जहरीला पदार्थ उनके शरीर में नहीं पाया गया। डॉक्टर ने हमारे रिपोर्टर को बताया कि यह एक आत्महत्या थी और रिपोर्ट मिलने के बाद जाँच अधिकारी ने फ़ाइल बंद कर दी हैं।

रहस्यमयी फ़ोन कॉल और धधकती हुई चिट्ठी उसकी आँखों के सामने छा गई। शेखर ने अख़बार टेबल पर फेंका और कुर्सी में अपनी स्थिति बदली।

शेखर ने अपने जूते देखे, एक पल सोचा और घंटी बजाई। चपरासी द्वार पर आ गया। "फ़र्स्ट-एड बाक्स ले आओ," शेखर ने कहा और अपने जूते उतार दिए। "ये जूते मिस्टर मलहोत्रा को दे देना और उनसे कहना मुझे इसकी पूरी रिपोर्ट चाहिए और मेरे लिए एक जोड़ी नए जूते ले आना।"

चपरासी ने जूते उठाए और चला गया। पंद्रह मिनट बाद चपरासी वापस आया, उसके पास एक जोड़ी नए जूते व फ़र्स्ट-एड बाक्स था। "और कुछ, सर?"

शेखर ने सिर हिलाते हुए कहा, "तुम जा सकते हो।" चपरासी वापस चला गया।

शेखर ने बाएँ हाथ की खरोंच को सेवलॉन से साफ़ किया और उस पर बैंड-एड लगा ली।

आधे घंटे बाद, वह ऑफ़िस में काम करने की भरसक कोशिश कर रहा था लेकिन वह काम में क़तई ध्यान नहीं लगा पा रहा था। *क्या यह कोई मज़ाक हो सकता है?* उसने

सोचा। वह इस तरह के विचारों के कारण काम नहीं कर पा रहा था जो उसके लिए पहेली थे और जब भी कोई चीज़ उसे दुविधा में डाल देती थी तो वह कुछ असामान्य सा काम करता था और सिर्फ़ इस विचार ने ही उसके चेहरे पर मुस्कुराहट बिखेर दी। वह खड़ा होकर दरवाज़े तक गया और बाहर झाँका, बाहर चपरासी के अलावा कोई नहीं था और वह भी दूसरी तरफ़ देख रहा था। उसने धीरे से दरवाज़ा बंद कर ताला लगा दिया और केबिन के सारे पर्दे भी लगा दिए। वह अपनी टेबल के पास गया और नीचे वाली दराज़ का ताला खोल उसमें से एक डीवीडी निकाली और डीवीडी प्लेयर की तरफ़ बढ़ा और उसमें डीवीडी डाल दी। वह फिर से बैठने के लिए लौट गया और कुर्सी या सौफे पर बैठने की जगह वह टेबल पर पैर लटकाकर बैठा। टेलीविज़न पर नाम आना शुरू हो गए थे।

वह हाथ में रिमोट थामे बैठा था, ताकि अगर कोई दरवाज़े पर दस्तक देता हैं तो वह फुटबॉल, बॉक्सिंग या समाचार लगा सके। वह टेलीविज़न की स्क्रीन पर नज़रें गड़ाए बैठा था जिस पर अब संगीत के साथ दो बड़े गुलाबी शब्द दिख रहे थे--*पिंक पैन्थर।* शेखर कपूर, ऐरोवॉक का चेयरमैन, चुपके चुपके अपने बंद केबिन में मुस्कुराकर कार्टून देखता था।

इस उम्र में भी जब वह कार्टून देखता था तो वह बच्चों की तरह हँसता था और इस समय उसके चेहरे पर एक विचित्र चमक होती थी। यही एक मात्र समय था जब वह हँसता था। अगर उसका कोई कर्मचारी उसे इस समय देख ले तो शायद उसे पहचान ही न पाए।

कार्टून में तल्लीन वह अपनी हँसी की आवाज़ कम रखने का प्रयास कर रहा था। वह चेहरे पर एक बड़ी मुस्कान लिए कार्टून देख रहा था कि दरवाज़े पर तेज दस्तक ने उसे डरा दिया और गलती से उसके हाथ से रिमोट ज़मीन पर गिर गया। वह टेबल से कूदा, रिमोट उठाया और उस डरे हुए बालक की तरह चैनल पलटने लगा जिसके हाथों मिठाई का मर्तबान टूटते ही उसकी माँ आ गई हो। उसने समाचार का चैनल लगा लिया और हाँफते हुए दरवाज़ा खोलने गया। *लोग क्या सोचेंगे अगर उन्हें पता चल जाएँ कि ऐरोवॉक का चेयरमैन चुपके चुपके कार्टून देखता है?* भय के अलावा उसे चिढ़ भी आ रही थी क्योंकि उसकी पसंदीदा चीज़ देखने में किसी ने बाधा उत्पन्न की थी।

कोई अब भी उसके ऑफ़िस का दरवाज़ा ठोंक रहा था जैसे वह उसे तोड़ना चाहता हो। शेखर को हैरत हुई कि ऐरोवॉक में किस की इतनी हिम्मत है कि वह शेखर के केबिन के दरवाज़े को इतनी जोर से ठोंके। जब ताला खोलकर उसने दरवाज़ा खोला तो उसके सामने गुलाबी सलवार कमीज़ में एक निहायत ही खूबसूरत युवती खड़ी थी। वह गुस्से में थी शायद इसलिए और अधिक आकर्षक लग रही थी। इस गौरी हसीना की आँखें चमकदार काली थी और उसकी नाक नोंकदार और ठोड़ी अत्यधिक प्यारी थी। उसके मुलायम गालों पर प्राकृतिक लालिमा थी। उसकी काया छरहरी थी और उसके उभार आकर्षक थे।

हैरान शेखर बुत की तरह खड़ा था और विस्मय से उसे घुर रहा था। शेखर को उसके आने की कोई उम्मीद नहीं थी क्योंकि जब तक उसे बुलाया न जाए वह उसके केबिन में कभी नहीं आती थी। वह उन्नति शर्मा थी। शेखर उसके क्रोध और कार्टून देखने में हुई बाधा को भूल गया था।

- - -

उन्नति अंदर आई। "क्या आपने हृषिता को प्रमोट किया है?" उसने गुस्से से पूछा।

उन्नति ने शेखर की तरफ़ देखा जो अब भी मूर्ति की तरह खड़ा था। उन्नति ने गला साफ़ किया और शेखर ने पलकें झपकाई। उसने फिर से कहा, "क्या आपने हृषिता को प्रमोट किया है?"

"हाँ," शेखर ने कहा।

"क्यों?"

"क्योंकि मैं बॉस हूँ।"

"मैं यहाँ पर चार साल से हूँ और उसने अभी अपना पहला हफ़्ता भी पूरा नहीं किया।"

शेखर अपनी कुर्सी पर लौटा और कहा, "वह एक काबिल लड़की है।"

"काबिल?!!" उन्नति ने हैरानी से कहा। "उसे नहीं पता इस कंपनी में कितने विभाग हैं, वह नहीं जानती हमारा टर्नओवर कितना हैं, उसे हमारे पीक सीज़न के बारे में नहीं पता, वह तो ये भी नहीं जानती कि यह कंपनी कितने साल पुरानी हैं और आप कहते है वह काबिल है?"

"तुम क्या चाहती हो?"

"मुझे मेरा प्रमोशन चाहिए।"

"ठीक है," शेखर ने कहा। "यह तुम्हारा हुआ। प्रमोशन के साथ तुम्हें दुगनी तनख़्वाह भी मिलेगी।"

वह मुस्कुराई। चार सालों की कड़ी मेहनत के बाद उसकी तरक्की होने वाली थी। उसे हरगिज़ ऐसी उम्मीद नहीं थी कि उसका मालिक उसे इतनी आसानी से प्रमोट कर देगा। उसे शेखर कपूर बिलकुल पसंद नहीं था लेकिन वह ख़ुद इसका असल कारण नहीं जानती थी। शायद उसे वह उसके अंहकार के कारण या उसकी अशिष्टता के कारण पसंद नही था या शायद उसे वह उसकी पैनी नज़रों की वजह से पसंद नहीं था जिसमें उसे कुछ दिखाई देता था--एक भूख!

"तुम्हारा प्रमोशन होता है," शेखर ने कहा। "और अब से तुम हो मेरी पर्सनल सेक्रेटरी।"

उसकी मुस्कान उड़ गई। *पर्सनल सेक्रेटरी?*

“तुम्हें तुम्हारा प्रमोशन लेटर आधे घंटे में मिल जाएगा।”

“नहीं, मुझे आपकी सेक्रेटरी नहीं बनना। मुझे मेरा प्रमोशन चाहिए।”

“क्यों नहीं? तुम्हें दुगनी तनख़्वाह मिलेगी।”

“नहीं, सेक्रेटरी नहीं, मुझे मेरा प्रमोशन चाहिए।”

“मेरे पास केवल एक ही स्थान हैं,” शेखर ने कहा। “और वह है मेरी PS. अब तुम ख़ुद तय करो तुम्हें यह चाहिए या नहीं।”

उन्नति की साँसे अब तक तेज़ हो चुकी थी, उसने कहा, “फिर हृषिता को प्रमोशन कैसे मिल गया?”

“मैं बॉस हूँ,” शेखर ने कहा। “मैं सही व्यक्ति को सही जगह पर रखता हूँ, इसलिए उसे प्रमोशन मिल गया। तुम्हारा सही जगह खाली है लेकिन तुम उस जगह पर काम नहीं करना चाहती।”

कही न कही वह जानती थी क्या होने वाला है। “मुझे मेरा प्रमोशन चाहिए,” वह बड़बड़ा रही थी। वह गुस्से में उबल रही थी लेकिन वह ख़ुद को रोक रही थी।

शेखर ने कंधे उचकाए। “इस स्थिति में मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता।”

भाड़ में जाओ, उन्नति ने सोचा और वह केबिन से चली गई और जाते हुए उसने दरवाज़ा धड़ाम से बंद किया।

तीन लोगों के परिवार में उन्नति ही एक मात्र कमाऊ सदस्य थी। वह अपने बचपन में ही जिम्मेदारी समझ गई थी। उसके पिता, जो एक शराबी थे, उसे व उसकी माँ को पैसों के लिए पीटते थे ताकि वह जुआ खेल सके और स्वयं को शराब में डूबा सके। एक बार अपनी माँ को पिता की क्रूरता से बचाने में उसके बाँह की हड्डी टूट गई थी।

उन्नति उसकी टेबल पर पहुँची, उसने पर्स टेबल पर पटका और कुर्सी में धँस गई।

“तुम तो एक घायल शेरनी लग रही हो,” उसकी सहेली छाया ने कहा।

“वह कुत्ते का पिल्ला मुझे उसकी पर्सनल सेक्रेटरी के पद का ऑफर दे रहा है।”

“ऑफर बुरा नहीं लग रहा,” छाया ने कहा। “तनख़्वाह?”

“दोगुनी।”

“यह बढ़िया है। तो समस्या क्या है?”

“मैं कोई शो-पीस नहीं हूँ जिसे वह साज सज्जा के लिए इस्तेमाल करे,” उन्नति ने कहा। “मैं ख़ुद पर उसकी नज़रे बर्दाश्त नहीं कर सकती।”

“उसने यह ऑफर मुझे क्यों नहीं दिया?” छाया मुस्कुराई।

“तुम जानती हो,” उन्नति ने कहा, “उस चालबाज़ हृषिता को प्रमोशन मिल गया।”

छाया ने हृषिता की टेबल की तरफ़ देखा। “कैसे?” छाया ने पूछा।

“तुम समझदार हो,” उन्नति ने कहा। “तुम समझ सकती हो, कैसे?”

◆ ◆ ◆

कैलाश दृढ़ उद्देश्य से मिस्टर कपूर के ऑफ़िस में दाख़िल हुए और मनीष ने बाहर निकलते समय कैलाश को झूठी मुस्कान दी लेकिन कैलाश बदले में मुस्कुरा नहीं सके। जिस बातचीत की उन्होंने कल्पना की थी वह उसमें ध्यानमग्न थे।

शेखर की टेबल पर रखे फ़ोन की घंटी बजी और उसने रिसीवर उठा लिया।

शेखर ने कैलाश को घूरा और फ़ोन पर कहा, “कौन हैं वे?”

“हेल्पिंग हैंड्स? धक्के मार के बाहर निकालो उन्हें,” शेखर ने कहा और कैलाश की तरफ़ देखा।

शेखर ने रिसीवर फेंका और कैलाश को घूरा जो बिना अनुमति अंदर आ गया था।

“सर, मैं आपसे कुछ बात करना चाहता हूँ,” कैलाश ने कहा, उनका दिल तेजी से धड़क रहा था।

शेखर कुर्सी पर पीछे झुक गया और उसने अपने हाथ सीने पर बाँध लिए।

“स... सर... मैं...” उन्होंने रूमाल से चेहरा पोंछा।

शेखर ने उसे देखा और कड़क आवाज़ में पूछा, “क्या तुम्हें छुट्टी चाहिए?”

“न... नहीं सर।”

“तो?”

“सर,” कैलाश संकोच में खड़े थे, उनका दृढ़ निश्चय कमज़ोर पड़ रहा था। “सर, मेरी बेटी की शादी...”

“बधाई,” शेखर ने उन्हें घूरते हुए कहा।

“स... सर,” कैलाश हकलाए। “मुझे पैसों की ज़रूरत है।”

“क्या तुम्हें इस महीने की तनख़्वाह नहीं मिली?” शेखर ने पेपरवेट टेबल पर घुमाते हुए कहा।

“जी सर, मुझे मिल गई,” कैलाश ने कहा। “लेकिन सर मेरी बेटी के शादी के लिए मुझे और पैसों की ज़रूरत है।”

“मैं तुम्हें तुम्हारे काम के लिए तनख़्वाह देता हूँ। तुम्हारे परिवार में शादियों के लिए नहीं।”

“सर, मेरा ओहदा घटने के बाद से मेरी तनख़्वाह दस गुना कम हो गई,” कैलाश ने कहा। “मेरे पास मेरी बेटी के विवाह के लिए पैसे नहीं है। मैं कर्ज़ में हूँ। मुझे पैसों की बेहद ज़रूरत है। मुझे पैसे चाहिए, सर।”

शेखर ने टेबल पर घूमते पेपरवेट को रोका और कैलाश को हिक़ारत से देखते हुए कहा, “क्या तुम्हारे डिमोशन के लिए तुम मुझे जिम्मेदार मानते हो?”

“नहीं, सर।”

“तो तुम्हें लगता है मुझे सभी लोगों को उनकी बहन बेटियों की शादी के लिए अतिरिक्त पैसे देने चाहिए?”

“लेकिन सर, मुझे लंबे समय से कोई बोनस भी नहीं मिला है।”

“तुम्हें बोनस नहीं मिला, तुम्हारा डिमोशन हो गया लेकिन तुम्हें नौकरी से निकाला नहीं गया। तुम जैसे बूढ़े लोग किसी काम के नहीं, मैं फिर भी बिना किसी कारण तुम्हें तनख़्वाह दे रहा हूँ और तुम एहसानमंद भी नहीं हो। मेरे डैड एक बेवकूफ़ थे जिन्होंने तुम्हें जनरल मैनेजर बना दिया था। मुझे बताओ मैं तुम्हें तनख़्वाह क्यों दूँ।”

“सर, मैं सबकुछ कर सकता हूँ लेकिन...” कैलाश ने कहा।

“लेकिन...? लेकिन क्या?”

“आप ने मुझे दूसरे कार्य की अनुमति नहीं दी है।”

“ओह, तो यह भी मेरी ही गलती है?”

“नहीं... नहीं, सर, मेरा यह मतलब नहीं था,” कैलाश ने अपनी हथैली का पसीना अपनी पतलून से पोंछा। “सर, मैं सबकुछ कर सकता हूँ।”

“तो?”

“सर, मेरे कहने का मतलब यह हैं कि मैं फ़ाइलों को एक टेबल से दूसरी टेबल ले जाने की बजाय किसी भी दूसरी जिम्मेदारी को संभाल सकता हूँ।”

शेखर ने उनको घूरा और क्रूरता से मुस्कुराकर कहा, “फिर जाकर मेरे लिए एक कप कॉफी बनाकर लाओ।”

“लेकिन, सर?”

“हाँ?”

“मेरा मतलब इस प्रकार के काम से नहीं हैं।”

“तो मिस्टर कैलाश चंद्र, दूसरी जिम्मेदारी से आपका क्या मतलब हैं?” शेखर कुर्सी पर आगे झुका।

“सर, मैं तीस सालों से इस कंपनी में काम कर रहा हूँ और...”

“मैंने तुमसे तुम्हारा बायोडाटा नहीं पूछा,” शेखर चिल्लाया।

“सर, आप मुझे और कोई भी काम दे सकते है,” घबराए कैलाश ने सुनाई देने योग्य आवाज़ में बोलने के लिए ज़ोर लगाया।

“मतलब तुम कॉफी नहीं बनाना चाहते?”

“न... नहीं, सर।”

“प्लीज़ बताए,” शेखर ने कहा। “आप कौन सा विशेष कार्य चाहते है?”

“सर, मैं R&D में अच्छा हूँ, मैं वो कर सकता हूँ।”

“जब लोग बूढ़े हो जाते हैं तो वे कमज़ोर हो जाते हैं,” शेखर ने कहा। “तुम यह कैसे करोगे?”

“सर, मैं कर लूँगा,” कैलाश ने अपना पसंदीदा काम पाने की उम्मीद से कहा।

शेखर ने अपनी दाढ़ी खुजाई और बोला, “मुझे लगता है जो व्यक्ति कॉफी नहीं बना सकता वह कुछ नहीं कर सकता।”

“सर, मैं कॉफी बना सकता हूँ।”

“लेकिन तुम बनाना नहीं चाहते?”

“सर, मैं कॉफी बनाऊँगा।”

“ठीक है। जाओ और कॉफी बनाकर लाओ।”

ऊर्जा से भरपूर, कैलाश तुरंत ऑफ़िस से निकल गए और कुछ मिनट बाद एक कप कॉफी के साथ वापस लौटे। उन्होंने शेखर को कॉफी दी और उसके सामने उत्साह से खड़े हो गए।

शेखर ने कॉफी के दो घूँट गटके और कहा, “बढ़िया कॉफी, यह वाकई बढ़िया कॉफी हैं। आज से तुम्हारा काम है मुझे दिन में तीन बार कॉफी पिलाना।”

“लेकिन सर, R&D?” कैलाश ने पूछा।

“मैंने कहा,” शेखर चिल्लाया। “अब - से - तुम्हारा - काम - है - मुझे - कॉफी - पिलाना।”

“लेकिन सर?”

“क्या हुआ?” शेखर चीख़ा। “क्या तुम्हें कोई और नौकरी मिल गई हैं?”

कैलाश चुपचाप खड़े रहे। उनके गले से कोई अल्फ़ाज़ नहीं निकलें।

“दफ़ा हो जाओ,” शेखर ने कहा।

कैलाश अपनी पत्नी के बायपास ऑपरेशन के कारण पहले से ही कर्ज़ में थे, उन्हें पैसों की बेहद ज़रूरत थी और यह उनकी आख़िरी उम्मीद थी। उन्होंने उनकी बेटी की शादी इस उम्मीद से तय कर दी थी कि वह कैसे भी पैसों का बंदोबस्त कर लेंगे लेकिन तय तारीख पास आ रही थी और उनके पास जरा भी पैसा नहीं था। हर सप्ताह सूदखोर उनके घर आकर उन्हें पैसा लौटाने या घर खाली करने के लिए धमकाते थे।

कैलाश बिना कुछ कहे वहाँ से चल दिए, उनका शिकन भरा चेहरा ग़मगीन था और उनकी बूढ़ी आँखों में उम्मीद के बुझते अंगारे थे। शादी की अनिश्चिता के डर से उनके घुटने काँप रह थे। उन्हें उस कंपनी में नौकरों की तरह काम करना क़तई पसंद नहीं था जहाँ वे कभी जनरल मैनेजर थे। और अब वे उसी कंपनी में किसी और के लिए कॉफी बना रहे थे। हालाँकि यह सबकुछ वे अपनी सारी ज़िंदगी कर सकते थे अगर इसके बदले उन्हें अपनी प्यारी बेटी के विवाह के लिए पैसे मिल जाते। कैलाश शायद पहले से ही शेखर का जवाब जानते थे लेकिन उन्होंने अपनी बेटी की ख़ातिर एक कोशिश की।

वे पैर घसीटते हुए अपनी टेबल तक गए और कुर्सी में धँस गए।

◆ ◆ ◆

4. एक दुर्घटना

शनिवार को, लगभग चार बजे शेखर प्लानिंग डिपार्टमेंट से लौटा और उसने टेबल पर अपना लैपटॉप देखा। यह चालू था लेकिन शेखर ने इसे चालू नहीं किया था ना ही उसने इसे टेबल पर रखा था, उसने तो इसे अपने बैग में छोड़ा था। मेरा लैपटॉप किसने छुआ? शेखर ने सोचा। वह कुर्सी पर बैठ गया और लैपटॉप को देखा जिसकी स्क्रीन पर एक बड़ा लिफ़ाफ़ा था जिसके नीचे लिखा था-- *'आपके लिए एक विशेष ईमेल है।'*

कैलाश एक कप कॉफी के साथ केबिन में दाख़िल हुए। शेखर ने उसके गर्दन पर एक निशान देखा लेकिन वह उसके चेहरे पर उदासी नहीं देख सका। कैलाश ने गर्म कॉफी का कप टेबल पर रखा और शेखर की तरफ़ देखे बिना वहाँ से चले गए।

शेखर ने टेबल पर एक चेक देखा; यह बैंगलोर में बन रही नई फ़ैक्टरी के कच्चे माल खरीदने का चेक था। उसे सिर्फ़ चेक पर दस्तख़त करना था लेकिन उसने चेक को नज़रअंदाज़ कर फिर से लैपटॉप की तरफ़ देखा, अपनी दाढ़ी खुजाई और लिफ़ाफ़े पर क्लिक किया। शब्द अंतिम चेतावनी लिफ़ाफ़े से बाहर कूदा। चमकीले हरे शब्द देखकर शेखर ने व्यग्रता की लहर महसूस की लेकिन इस बार शब्दों ने नृत्य नहीं किया। काँपती उँगली से उसने अंतिम चेतावनी पर क्लिक किया और एक संदेश स्क्रीन पर उभर आया।

मिस्टर शेखर बलराज कपूर,

हमने आपको फ़ोन और ख़त से चेतावनी दी लेकिन आपने दोनों चेतावनीयों को पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर दिया। हमने आपको आपके कुकृत्य रोकने के लिए चेतावनी दी लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। आपने हमारे सामने और कोई विकल्प नहीं छोड़ा है। अब आप अपने भविष्य के लिए स्वयं जिम्मेदार है। यह आपकी आख़िरी चेतावनी है।

न्याय की नगरी

शेखर कपूर खड़ा होकर क्रोध और उलझन से केबिन में टहलने लगा। *मुझे पुलिस के पास जाना चाहिए या अस्पताल? क्या वाकई कोई न्याय की नगरी है? क्या यह कोई मज़ाक हो सकता है? क्या कोई इसके पीछे हो सकता है? आशुतोष जैसा कोई? क्या इस सब के पीछे आशुतोष उपाध्याय हो सकता है?* उसने सोचा। वह फिर से अपना सिर पकड़कर बैठ गया।

◆ ◆ ◆

शेखर आशुतोष उपाध्याय से केवल दो बार ही मिला था और पिछली बार जब वे मिले थे तो शेखर ने उससे बात तक नहीं की थी।

शेखर फ़ीटलैंड शू कंपनी के चेयरमैन आशुतोष उपाध्याय से पहली बार छः महीने पहले मिला था और उसी ने फ़ोन पर यह मीटिंग तय की थी।

- - -

"हैलो, मैं शेखर कपूर बोल रहा हूँ, ऐरोवॉक का चेयरमैन। मैं आपसे मिलना चाहता हूँ अगर आप व्यस्त ना हो तो।" शेखर ने फ़ोन पर कहा।

"आपसे मिलना तो मेरा सौभाग्य होगा, सर," आशुतोष उपाध्याय ने उत्साहित होकर कहा। "तीन बजे मेरे ऑफ़िस में मिलते है।"

काले रंग की कैडिलैक फ़ीटलैंड की तरफ़ तेजी से बढ़ रही थी और उसकी चाल भी उसके मालिक की चाल की तरह ही मग़रूर थी। कैडिलैक परिसर में दाख़िल हुई, शेखर कार से बाहर निकला और इमारत और ख़ुशनुमा माहौल की बिना सराहना करें उसने फ़ीटलैंड की विशाल इमारत में प्रवेश किया। इमारत में स्पेन के भुरभुरे पत्थर का फ़र्श और बहुत सुंदर रिसेप्शन था। दस मिनट बाद शेखर ने एक दरवाज़ा खटखटाया।

एक आदमी ने दरवाज़ा खोला।

"आइये, आपका स्वागत है, सर," उस आदमी ने कहा। "मैं आशुतोष उपाध्याय हूँ। आपके यहाँ आने की मुझे बेहद ख़ुशी है। प्लीज़ सर, बैठिए।"

शेखर जब केबिन में दाख़िल हुआा तब उसके चेहरे पर मुस्कान नहीं थी।

"मैं हमेशा से आपसे मिलना चाहता था, सर," आशुतोष ने कहा। "लेकिन मैं नहीं जानता था मुझे ये मौका कब मिलेगा। आख़िरकार वो दिन आ ही गया। यही वो दिन हैं सर, यही वो दिन हैं।" आशुतोष पहली बारिश में ख़ुश चातक पक्षी जितना आनंदित लग रहा था।

आशुतोष भी शेखर के सामने सोफे पर बैठ गया। वह एक लंबा और दुबला नौजवान था जो गौरे रंग, सजी संवरी दाढ़ी और सफ़ेद कोट में राजसी लग रहा था और उसकी भूरी चमकदार आँखों और शिष्ट मुस्कान में तहज़ीब छलक रही थी।

"सर, वैसे तो यह हमारी पहली मुलाक़ात हैं," आशुतोष ने कहा। "लेकिन मुझे हमेशा से ऐसा लगता है जैसे मैं आपको बहुत अच्छे से जानता हूँ। असल में, सर, मैं आपके पिताजी का बहुत बड़ा प्रशंसक हूँ। वे बेहद ही उम्दा व्यक्तित्व के मालिक हैं। उनकी कहानी हमेशा से मेरे लिए प्रेरक रही है और मुझे लगता है मैं जो कुछ भी जानता हूँ सब उन्हीं से सीखा हूँ। और मुझे यह भी लगता है कि आपने इस विशाल साम्राज्य को बहुत अच्छे से संभाला है।"

इस शानदार आवभगत के बाद शेखर कुछ अशांत दिखने लगा। उसने देखा वह एक आलीशान आयताकार कमरे में था जिसमें बाकी इमारत की तरह ही सैंडस्टोन फ़र्श और दीवारों पर मख़मली रंग था जिससे दीवार पर टंगी पेंटिंग और भी खूबसूरत लग रही थी। ऑफ़िस में बहुत से एंटीक वस्तुएँ थी जैसे मिस्र का क़ालीन, एक प्रचीन घूमने वाली किताबों की अलमारी, इंडोनेशिया का फूलदान और जूते के आकार का सौफ़ा। बाईं दीवार पर एक सुंदर महिला की तस्वीर टंगी थी जिस पर फूलमाला चढ़ी थी। वह आशुतोष की मृत पत्नी थी। दाईं दीवार पर एक और तस्वीर थी जिसमें आशुतोष, उसकी पत्नी और उसकी प्यारी सी पाँच वर्ष की बेटी ताज महल के सामने खड़े थे और सभी के चेहरे पर एक बड़ी और दिलकश मुस्कान थी।

शेखर ने आशुतोष पर निगाह डाली जो अत्यधिक प्रसन्न लग रहा था। *यह बेवकूफ़ है,* शेखर ने सोचा।

"मैंने आपके बारे में अख़बार और मैग्ज़ीन में बहुत पढ़ा हैं। यह मेरे लिए महान प्रेरणा रही है। मुझे आपका बिज़नेस का तरीका बहुत पसंद है।"

शेखर ने खोखली मुस्कान दी। *और तुम मुझ से ही मुक़ाबला कर रहे हो।* शेखर ने पास ही टेबल पर रखी *बिज़नेस वर्ल्ड मैगज़ीन* पर नज़र डाली, जिसके पेज नंबर सैंतीस पर 'लीड़ींग बिज़नेस मेन' के शीर्षक में आशुतोष उपाध्याय की तस्वीर थी। शेखर को लगता था कि वहाँ पर उसकी तस्वीर होना चाहिए थी।

"ओह! मैं माफ़ी चाहूँगा, सर," आशुतोष ने कहा। "मैंने आपको कुछ ऑफर ही नहीं किया। बताए, आप क्या लेंगे, सर? चाय, कॉफी, कोल्ड ड्रिक, व्हिस्की, वाइन, स्कॉच, बीयर।"

शेखर ने कहा, "स्कॉच।"

मिनी बार में आशुतोष ने दो पेग स्कॉच के बनाए और ग्लास लाकर टेबल पर रखते हुए वह सोफे पर बैठ गया।

"प्लीज़, सर लीजिए," आशुतोष ने कहा और ग्लास उठाकर वह सोफे पर आराम से टिककर बैठ गया।

शेखर की नज़रें फूलमाला चढ़ी तस्वीर पर थी।

"वह मेरी पत्नी थी," आशुतोष ने कहा। "चार महीने पहले वह हमारे घर में रहस्यमयी परिस्थिति में मृत पाई गई। पुलिस रिपोर्ट कहती है कि उसने सभी नौकरों को छुट्टी देकर अपने आप को फाँसी लगाकर आत्महत्या कर ली लेकिन मैं कभी इस बात पर यक़ीन नहीं कर पाया।" आशुतोष की आँखें नम हो गई थी।

साँस खींचते हुए आशुतोष ने कहा, "माफ़ कीजिए, सर। मैं भी आपसे क्या बेमतलब बातें करने लगा।"

शेखर नहीं जानता था उसे क्या कहना चाहिए। *दया*--उसे नहीं पता था ये क्या होती है। आशुतोष अब भी उसके लिए एक *बेवकूफ़* था।

"बताइए सर, मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?" आशुतोष ने कहा।

एक आदमी ऑफ़िस में दाख़िल हुआ।

उत्साह से भरपूर आशुतोष खड़ा होकर बोला, "आओ यतन, मैं तुम्हें किसी से मिलवाना चाहता हूँ।"

शेखर ने ग्लास उठाकर एक ही बड़े घूँट में पेग ख़त्म कर दिया।

"सर यह है यतन डुमरे," आशुतोष ने कहा। "यह मेरा साला है और यतन यह हैं मिस्टर शेखर कपूर।"

यतन ने शेखर से हाथ मिलाने के लिए हाथ बढ़ाया लेकिन शेखर ने बेहद ही बेढंगे तरीके से उससे हाथ मिलाया; उसकी आँखों में न तो कोई अभिवादन था और न ही उसके चेहरे पर कोई गर्मजोशी थी और वह तो उससे मिलने के लिए खड़ा तक नहीं हुआ था।

आशुतोष शेखर की तरफ़ पलटकर बोला, "सर, आप कुछ कह रहे थे।"

अपने सामने बैठे दो आदमियों के चेहरों पर बिलकुल अलग अलग हाव भाव देखकर शेखर को अजीब लग रहा था। उसने उत्साहित आशुतोष व भावशून्य यतन पर एक नज़र डाली।

मैं बिज़नेस वर्ल्ड में फिर से अपनी तस्वीर चाहता हूँ। "मैं आपके साथ बिज़नेस करना चाहता हूँ।"

आशुतोष मुस्कुराकर सोफे पर कुछ आगे झुका, "सर, आपके साथ बिज़नेस करना तो मेरी ख़ुशकिस्मती होगी। बताए सर।"

"मैं फ़ीटलैंड खरीदना चाहता हूँ।"

इन शब्दों ने जैसे आशुतोष को ज़ख़्मी कर दिया था और वह सदमें में लगने लगा। यतन कुछ आगे झुका और शेखर को यतन के भावशून्य चेहरे पर अब कुछ सुपाठ्य भाव दिख रहे थे।

आशुतोष ज़बर्दस्ती ज़ोर से हँसा, "अच्छा मज़ाक हैं सर।"

शेखर का चेहरा गंभीर था, "मेरे लिए बिज़नेस कोई मज़ाक नहीं है।"

"फ़ीटलैंड मेरे लिए कोई बिज़नेस नहीं है, सर," आशुतोष ने कहा। "यह मेरा जुनून है और मैंने इसके लिए कड़ी महनत की है। यह एक तीन साल का थका देने वाला सफर था। मैंने इसे अपने बच्चे की तरह बड़ा किया है। यह मेरे लिए सिर्फ़ बिज़नेस नहीं है।"

"तुम्हें इसकी सबसे अच्छी क़ीमत मिलेगी," शेखर ने कहा।

"हम अपने बच्चे नहीं बेचते," आशुतोष ने कहा।

कमरे में अर्थपूर्ण सन्नाटा था।

कुछ पल रूकने के बाद, आशुतोष ने कुछ कठोरता से कहा, "मुझे माफ़ कीजिए, सर, मैं फ़ीटलैंड नहीं बेचूँगा।"

शेखर ने ग्लास टेबल पर रखकर कोट के जेब से चेक बुक निकाली और कहा, "अपनी क़ीमत बोलो।" उसने दस्तख़त किया हुआ एक रिक्त चेक आशुतोष की ओर बढ़ाया। यतन ने सोफे पर अपनी स्थिति बदली।

"नहीं सर," आशुतोष ने कहा। "आपके ऑफर के लिए शुक्रिया और मुझे आपसे मिलने की ख़ुशी है लेकिन मैं कुछ नहीं बेच रहा हूँ।"

शेखर ने चेक की तरफ़ देखा और उसे फिर से जेब में रख लिया। "तो तुम्हें लगता है कि तुम ऐरोवॉक के साथ मुक़ाबला कर सकते हो?"

"मुझे नहीं पता सर, लेकिन मैं कोशिश करके यह जानना पसंद करूँगा बजाय कि हार स्वीकार कर लूँ।"

"हो सकता है इस कोशिश के बाद तुम्हें फ़ीटलैंड को कौड़ियों के दाम बेचना पड़े।" शेखर के चेहरे पर एक व्यंग्यात्मक मुस्कान थी।

"मैं संभावनाओं में नहीं जीता," आशुतोष ने कहा और एक पल रूककर वह फिर से बोला, "क्या आपको मुक़ाबले से डर लगता है?"

"यह केवल प्रतिस्पर्धा नहीं है," शेखर ने मुस्कुराकर कहा। "तुम इस बिज़नेस में पिछले तीन साल से हो और मुझे तुमसे कोई समस्या नहीं थी लेकिन जब तुमने मेरे *पहले स्थान* पर आक्रमण किया, उसी दिन से मैं तुमसे नफ़रत करने लगा। हाँ, तुमने सही सुना, मैं

तुमसे नफ़रत करता हूँ उस दिन से जिस दिन मैंने तुम्हारी तस्वीर *बिज़नेस वर्ल्ड* में देखी है।"

"तो यह सब मैगज़ीन में मेरी तस्वीर के बारे में है?" आशुतोष ने पूछा।

"हाँ," शेखर ने सिर हिलाया।

"फिर मुझे माफ़ कीजिए सर। इसके लिए आपको इंतज़ार करना पड़ेगा," आशुतोष बोलकर खड़ा हो गया। "सर, मैं आपसे फिर मिलना चाहूँगा लेकिन किसी और परिस्थिति में।" आशुतोष ने शेखर से हाथ मिलाने के लिए हाथ बढ़ाया।

शेखर और आशुतोष दोनों खड़े हो गए। शेखर को यह उसका अपमान लगा। उसने आशुतोष से हाथ नहीं मिलाया और गुस्से में वह दरवाज़े की तरफ़ चल दिया। जब वह दरवाज़े पर था उसने बाईं ओर की दीवार पर अपने पिता बलराज कपूर की तस्वीर देखी जो किसी पत्रिका से काटी हुई लग रही थी। वह दरवाज़ा खोल वहाँ से चला गया।

पार्किंग तक के रास्ते में उसकी चाल तेज व भीषण थी और इस वजह से कई लोगों ने उसे पलटकर देखा। उसके अंदर कुछ उबल रहा था। फ़ीटलैंड हासिल करना अब केवल व्यापार नहीं था। यह उसके ज़ख़्मी अहंकार के लिए मलहम था।

उसने कार में अपना फ़ोन निकाला और वकील को फ़ोन लगाया, "मुझे किसी भी क़ीमत पर फ़ीटलैंड चाहिए। एक मीटिंग बुलाओ।"

शेखर कपूर से मिलने के लगभग एक माह बाद आशुतोष उपाध्याय को पार्सल मिला।

दरवाज़े पर दस्तक हुई।

"अंदर आईए," आशुतोष ने बिना उस ओर देखे कहा।

सफ़ेद यूनिफार्म में एक बूढ़ा चपरासी अंदर आया और कहा, "आपके लिए एक पार्सल है सर।" और उसने भूरा लिफ़ाफ़ा आशुतोष को दे दिया।

आशुतोष ने इशारा कर चपरासी को जाने की अनुमति दी और लिफ़ाफ़ा खोला। उसने काग़ज़ की थप्पी को खींच कर बाहर निकाला और पढ़ने लगा और अचानक कई भयानक भावनाओं ने उसे घेर लिया। यह सच नहीं हो सकता; *यह कोई बकवास सा मज़ाक हैं जो बिलकुल भी मज़ेदार नहीं है।*

उसके हाथों में फ़ीटलैंड के स्वामित्व की कानूनी सूचना थी, जिसके अनुसार अब कंपनी का मालिक शेखर कपूर था। आशुतोष उपाध्याय ने, अपनी आँखों पर अविश्वास कर, अपने वकील को फ़ोन लगाया जो दस मिनट में आशुतोष के सामने था।

"सर, जब आपने इसे बेचा ही नहीं," वकील मिस्टर परमार ने कहा। "तो उनके पास यह साबित करने का कोई तरीका ही नहीं है।"

"तो उन्होंने हमें ये काग़ज़ात क्यों भेजे हैं?"

"सर, मुझे लगता है उन्होंने आपको परेशान करने के लिए ऐसा किया हैं। हम एक कानूनी लड़ाई लड़ेंगे और यकीनन इसे जीतेंगे भी।"

आशुतोष और परमार ने ग़ैरक़ानूनी ढंग से कंपनी शेखर कपूर के नाम किए जाने के विरूद्ध मुक़दमा दायर कर दिया लेकिन न्यायलय में शेखर कपूर ने फ़ीटलैंड को खरीदने के कानूनी दस्तावेज़ और साथ ही आशुतोष उपाध्याय के बैंक ख़ाते में पाँच सौ करोड़ रूपये की लेने देन के दस्तावेज़ पेश किए। शेखर कपूर के पक्ष में रजिस्ट्रार व कुछ चश्मदीदों ने गवाही दी जो उस समय उपस्थित थे।

परमार के पास स्वामित्व और शेखर का छल साबित करने के लिए कुछ नहीं था और परमार और आशुतोष मुक़दमा हार गए और साथ ही फ़ीटलैंड भी।

आशुतोष उपाध्याय उदासी में डूब गया लेकिन वह यह नहीं समझ सका कि शेखर कपूर ने उन कागज़ो पर उसके दस्तख़त कैसे लिए। एक चीज़ तो तय थी कि उन दस्तावेज़ों पर उसके दस्तख़त असली थे उनमें कोई छेड़छाड़ नहीं की गई थी लेकिन यह कैसे संभव था।

- - -

दरवाजे पर एक दस्तक ने शेखर को उसके विचारों से वापस खींच लिया।

"अंदर आ जाओ," उसने कहा।

"सर," यह एक लड़की की आवाज़ थी।

शेखर उसे देखते ही खड़ा हो गया। वह उन्नति थी। वह हरे सलवार कमीज में खूबसूरत लग रही थी लेकिन उसकी आँखों में उदासी थी और वह ख़ामोश खड़ी थी।

"क्या कोई समस्या है?"

"सर, मुझे पैसों की ज़रूरत है," उन्नति ने कहा, उसकी आवाज़ ग़मगीन थी।

"क्या हुआ?" शेखर ने पूछा।

चेहरे की उदासी ने उसकी खूबसूरती को बिलकुल प्रभावित नहीं किया।

"मेरे पिता की हालत बहुत गंभीर है," उन्नति ने कहा। "वे अस्पताल में भर्ती है और मेरे पास उनके इलाज के लिए पैसे नहीं है।"

"प्लीज़, तुम बैठो और शांत हो जाओ।" शेखर ने धीरे से उसकी बाँह पकड़कर उसे कुर्सी पर बैठा दिया।

"वे कौन से अस्पताल में है?"

"जे.के. अस्पताल में, सर।"

"तुम चिंता मत करो," शेखर ने कहा। "सब ठीक हो जाएगा।"

शेखर ने उसके टेबल की निचली दराज़ का ताला खोला और एक लाख रूपये निकालकर टेबल पर रख दिए।

उन्नति ने नोट की गड्डी देखी।

"मैं भी तुमसे कुछ चाहता हूँ," शेखर ने कहा।

"हाँ!"

मैं तुम्हें पसंद करता हूँ, तुम कितनी हसीन हो, शेखर ने सोचा।

"शायद तुम समझ सकती हो?" शेखर ने कहा।

"अगर आप सोचते है कि," उन्नति ने चिढ़कर कहा, "मैं इसके बदले आपके साथ सो जाऊँगी तो आप ग़लत है, ऐसा नहीं होने वाला।"

"नहीं," शेखर ने कहा। "मेरा वो मतलब नहीं था।"

"फिर...?"

अगर मैं तुम्हारे साथ सोना चाहता तो यह कहना आसान था, हे भगवान! मैं यह कह क्यों नहीं पा रहा हूँ।

उन्नति खड़ी हुई, "माफ़ कीजिए लेकिन मैं आपका कोई काम नहीं कर सकतीं," और वह ऑफ़िस से चली गई।

शेखर खड़ा हुआ, "ओह शीट!"

मैं उससे पूछ क्यों नहीं पा रहा हूँ?

"तुम मुझे गलत समझ रही हो, मेरा वो मतलब नहीं था।"

लेकिन उन्नति जा चुकी थी।

शेखर ने नोट की गड्डी फिर से दराज़ में रख दी और धीरे से बड़बड़ाया, "क्या तुम मेरे साथ चलोगी," वह कुर्सी पर बैठ गया, "कॉफी पर।"

पौने पाँच बजे वह ऑफ़िस से निकल गया।

◆ ◆ ◆

कुछ भिखारी सिगनल पर भीख माँग रहे थे। उनमें से एक बूढ़ी कमज़ोर भिखारिन थी अरूंधति, जो तीन महीनों से इसी सिगनल पर भीख माँग रही थी। कोई नहीं जानता था वह कहाँ से आई थी, उसकी नई सहेली कमला भी नहीं। वह कभी भी अपने परिवार के बारे में बात नहीं करती थी।

एक काले रंग की कैडिलैक सिगनल पर रूकी और अरूंधति ने खिड़की के पास खड़े होकर भीख माँगी, "बाबूजी, मुझे कुछ खाने के लिए दे दीजिए, मुझे भूख लगी है, मैंने कई

दिनों से कुछ नहीं खाया।" वह ठीक से चल भी नहीं पा रही थी और बेहद कमज़ोर लग रही थी, उसकी आँखें में लाचारी थी जैसे उसने बहुत दर्द व पीड़ा सही हो।

"काँच पर से हाथ हटा," शेखर चीख़ा।

घबराकर उसने काँच से हाथ हटाया और काँच पर पड़े हाथ के निशान को ताकने लगी। उसे पता ही नहीं चला था कब उसने हाथ काँच पर रख दिया था।

"क्या तुझे पता है इस कार को साफ़ रखने के लिए मुझे कितने रूपये खर्च करना पड़ते है?"

"माफ़ कर दीजिए, बाबूजी," बूढ़िया अपनी ग़लती पर शर्मिंदा थी।

शेखर उसके हाथ के निशान को देख आग-बबूला हो गया था।

"बाबूजी, मेहरबानी करके मुझे कुछ दे दीजिए।"

"तुम पैसों का क्या करोगी?"

"बाबूजी, मैं कुछ खाऊँगी, मुझे बहुत भूख लगी हैं।"

"तुम्हें खाना क्यों चाहिए, तुम्हें क्या लगता है तुम कितने दिन और ज़िंदा रहोगी। तुम जैसे लोगों के कारण ही जनसंख्या कम नहीं हो रही है। इस उम्र में भी तुम सिर्फ़ खाने के बारे में सोच रही हो इसीलिए भारत को खाने की कमी की समस्या से जूझना पड़ रहा हैं।"

बूढ़ी भिखारिन को समझ नहीं आया वह क्या कहे, उसे क़ीमती कार में बैठे एक अमीर आदमी से ऐसे जवाब की क़तई उम्मीद नहीं थी।

"यह तुम्हारा मरने का समय है, अगर तुम जैसे लोग भी जिएँगे तो जनसंख्या कैसे कम होगी?"

सिगनल अब हरा हो गया था। शेखर ने कार का एक्सीलरेटर दबाया और कार आगे बढ़ गई। उस बूढ़ी भिखारिन की हैरान निगाह अब उस कार पर ही थी और वह उसे तब तक देखती रही जब तक वह मोड़ पर ओझल नहीं हो गई।

उसकी सहेली कमला जिसने सबकुछ सुन लिया था उसके पास आई और उसे फ़ुटपाथ के पास बैठाया।

◆ ◆ ◆

ढलते नारंगी सूरज ने सबकुछ अपने नारंगी रंग में रंग दिया था। कैडिलैक सड़क पर तैर रही थी और घर की तरफ़ बढ़ रही थी। रास्ते में *हेल्पिंग हेंड्स* और अपनी ज़मीन के टुकड़े के पास से गुज़रते वक़्त शेखर ने एक बार फिर *हेल्पिंग हेंड्स* को कोसा। जब से वह हाईवे

पर था उसकी कार की रफ़्तार कम नहीं हुई थी। कुछ मिनट बाद उसकी कार जीवनदान अस्पताल की विशाल इमारत के पास से गुज़री; उसने पढ़ा 'जीवनदान'।

बकवास, ज़्यादातर लोग अपना जीवन यहीं दान कर देते होंगे।

उसकी कार अस्पताल के सामने से सौ किलोमीटर प्रति घंटे से भी अधिक रफ़्तार से गुज़री।

उसे अचानक ऐसा लगा जैसे कार में वह अकेला नहीं हैं। उसने शंका से डैशबोर्ड की तरफ़ देखा जहाँ कुछ अलग नहीं था परंतु उसे लगा वहाँ निश्चित रूप से कुछ हैं। उसने अपना हाथ स्टीयरिंग व्हील के आगे डैशबोर्ड की तरफ़ बढ़ाया परंतु उसे गर्म हवा के अलावा और कुछ महसूस नहीं हुआ।

उसने स्पीडोमीटर पर निगाह डाली जिसमें रफ़्तार 120 किलोमीटर प्रति घंटा थी। उसे फिर से वही एहसास हुआ जो उसे कुछ दिन पहले हुआ था जब उसे वह रहस्यमयी कॉल आया था। उसने महसूस किया कुछ बहुत ख़ौफ़नाक होने वाला हैं जिसने उसे फ़ोन कॉल, चिट्ठी, ईमेल और लाल ट्रैफ़िक सिगनल की याद दिला दी। *तुम्हें अपने कुकृत्य बंद करने की चेतावनी दी जाती है,* उसके सिर में एक आवाज़ चीख़ी, *द्वितीय चेतावनी... आख़िरी चेतावनी... अपने भविष्य के लिए तुम स्वयं जिम्मेदार हो, अपने कुकृत्य बंद कर दो।*

उसने दूसरे वाहनों को पीछे छूटते हुए देखा। अचानक उसने पाया कि उसका स्टीयरिंग व्हील जाम हो गया था और बिलकुल नहीं हिल रहा था। उसका दिल जैसे धड़कना भूल गया। कार तेज़ गति से थोड़ी बाईं ओर घुस रही थी और वह कार को सीधा रखने के लिए स्टीयरिंग व्हील घुमाने की हर संभव कोशिश कर रहा था परंतु उसके लिए संतुलन बनाना हर पल मुश्किल होता जा रहा था। एड्रिनैलिन का गर्म असर वह अपने चेहरे और कानों पर महसूस कर सकता था और अब उसे पसीना आने लगा था। वह लगातार कार को संतुलित और स्टीयरिंग व्हील को घुमाने की कोशिश कर रहा था। उसका दिल जोरों से धड़कने लगा उसकी हर धमनी फड़क रही थी वह अपने सिर और गर्दन में रक्त का दबाव महसूस कर सकता था। जैसे ही उसने थूक गटका उसे एहसास हुआ कि हर चेतावनी सही थी।

कार चलाते समय सावधान रहना।

गोली की तरह भागती कार के स्टीयरिंग व्हील को घुमाने के लिए उसने और ज़्यादा ताकत लगाई और अचानक ही स्टीयरिंग व्हील घूम गया। इतनी तेज़ कार का स्टीयरिंग तेज़ी से घूमने के कारण कार पलटी खा गई, हवा में दो बार घूमी और धम्म से ज़मीन पर गिरने के बाद एक बार और पलटी। दुर्घटना से स्तब्ध आसपास के वाहनों ने अचानक ब्रेक लगाए और कई तो आपस में टकरा गए। परंतु कोई भी यह नहीं समझ सका कि अच्छे से चलती हुई कैडिलैक बिना किसी कारण के अचानक पलट कैसे गई!

अपने अपने वाहन से निकलकर लोग काली कार की तरफ़ दौड़े। उन्होंने ख़ून से सने एक मोटे आदमी को उल्टी कार में फँसा पाया। किसी ने एम्बुलेंस को फ़ोन किया और किसी और ने पुलिस को।

दूर एक सायरन बज रहा था और जल्द ही एक एम्बुलेंस वहाँ आ गई। एम्बुलेंस के एक तरफ़ मोटे अक्षरों में लिखा था--*जीवनदान अस्पताल।* तीन लोग तेज़ी से एम्बुलेंस से बाहर निकले--दो पैरामेडिक स्ट्रेचर के साथ और एक डॉक्टर। वे भीड़ को चीरते हुए शेखर की उल्टी कार तक पहुँचे और दो अन्य लोगों की मदद से उन्होंने शेखर का ख़ून से सना शरीर बाहर निकाला। वह बेहोश था, उसके माथे से रक्त बह रहा था और उसका चेहरा रंगा हुआ था। पैरामेडिक ने शेखर को स्ट्रेचर पर रखा और तेज़ी से उसे एम्बुलेंस में ले गए।

जिन युवकों ने पैरामेडिक की मदद की थी उनके कपड़े भी रक्त में रंग गए थे। तेज़ी से डॉक्टर और पैरामेडिक भी एम्बुलेंस में चढ़े और दरवाज़ा बंद कर लिया। दो टोन सायरन से भीड़ को चीरते हुए एम्बुलेंस तेज़ रफ़्तार से जीवनदान अस्पताल की तरफ़ चल दी। एम्बुलेंस में डॉक्टर ने उसे जाँचा, वैसे तो वह ज़िंदा था, उसका दिल धड़क रहा था और उसकी साँसे चल रही थी परंतु उसकी हालत गंभीर थी और हर पल बिगड़ती जा रही थी। डॉक्टर ने उसे ऑक्सीजन मास्क, इन्ट्रावेनस फ्लूड लगाया, और ईसीजी मशीन की लीड उसके शरीर से चिपका दी।

शेखर की धड़कने धीमी हो चुकी थी और उसका ब्लड प्रेशर कम हो रहा था। वह शॉक में था और उसकी साँसे तेज और उथली हो गई थी। डॉक्टर को शंका थी वह शायद ही बच पाएगा और अचानक उसका शरीर झटके लेने लगा। डॉक्टर ने उसे इंजेक्शन दिया लेकिन उसकी स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। जीवनदान अस्पताल के गेट पर, जब डिजिटल घड़ी में शाम के 5:55 समय हुआ था, एम्बुलेंस रूकी, और उन्होंने उतरने के लिए दरवाज़ा खोला। डॉक्टर ने देखा ईसीजी मॉनिटर पर टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें सीधी हो गई थी और उनके अनुसार उसकी धड़कने बंद हो गई थी। डॉक्टर ने उसे चेक किया उसकी साँसे भी बंद हो चुकी थी, उनके अनुसार शेखर कपूर मर चुका था।

◆ ◆ ◆